अज़ान क्या है ?

इसमें अज़ान का अर्थ, उद्देश्य, महत्व, वुज़ू, नमाज़, इस्लाम, मुसलमान और काफ़िर के अर्थ से सम्बन्धित उल्लेख है।

लेखक
आचार्य सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रकाशक–
मकतबः पयामे अम्न,
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ-20

अज़ान क्या है?

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम–	अज़ान क्या है?
लेखक–	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी (आचार्य)
संस्करण हिन्दी	बारहवाँ
पुस्तक संख्या	2000
वर्षा	2020
मूल्य	30 रु०
प्रकाशक–	मकतबः पयामे अम्न, नदवा रोड डालीगंज लखनऊ

Publisher:	**Maktaba Payam-e-Amn** **Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India**
Website:	**www.islamicjpamn.com**
Mobile–	**0091– 9919042879, 9984490150**
E- Mail–	**maktaba.pyameamnlko@gmail.com** **siddiquilko@yahoo.com**

मिलने के पते

1. जामिया दारे अरक़म मुहम्मदपुर गौंती, फ़तेहपुर
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मोहम्मद अली रोड, भिण्डी बाज़ार, मुम्बई-400003
3. सेन्ट्रल बुक डिपो, इब्राहीमपुरा भोपाल।
4. मकतबः नदविया, नदवा (लखनऊ)
5. मकतबः अल् फ़ुरक़ान, नज़ीराबाद (लखनऊ)
6. मकतबः हरमैन, मरकज़, लखनऊ

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
सन्देश (इस्लामी जगत के श्रेष्ठ विद्वान ह़ज़रत मौलाना अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह़मतुल्लाह)	5
प्रस्तावना	7
भाग-एक—अज़ान का अर्थ एवं व्याख्या	
अज़ान का आरम्भ	9
अज़ान के शब्द	9
अज़ान की व्याख्या	10
पहले शब्दों की व्याख्या	11
तमाम इन्सानों को पहले के शब्दों में सम्बोधन	11
अल्लाह सब से बड़ा है	11
मनुष्य का धोखा	12
अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं	13
प्रकृति भी उसी की उपासक है	13
केवल अल्लाह ही के आगे सर झुकाये	14
तीसरे शब्दों की व्याख्या	14
रसूल (दूत) परमेश्वर का रूप नहीं होते	15
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अन्तिम महाईशदूत हैं	15
चौथे शब्द की व्याख्या	15
नमाज़ की विधि	16
नमाज़ का आदेश	16
अल्लाह ही सर्वमहान है	18
अज़ान में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की चर्चा	19
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के जीवन की एक झलक	19
आप का घर	20
शासन के रूप में	20
वस्त्र की दशा	20
भोजन की अवस्था	21

विषय	पृष्ठ सं०
बिस्तर की अवस्था	21
आप की दानशीलता	21
जीवन विधान	22
अ़रब देश पर अधिकार	23
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ईशभक्ति	24
महाईशदूत की विशेषता	24
नमाज़ में ईश उपासना	25
परमेश्वर विश्वास का अर्थ	26
परमेश्वर के प्रति हमारा व्यवहार	27
भाग-दो—मस्जिद, वुज़ू और नमाज़ का तरीक़ा	
अज़ान में नमाज़ का ज़िक्र	28
मस्जिद का महत्त्व	28
भाग-तीन— इस्लाम और मुसलमान का अर्थ और उसकी मूल आस्थाएँ	
इस्लाम धर्म के संस्थापक	37
इस्लाम विभिन्न भाषाओं में	38
इस्लाम धर्म की मूल आस्थाएँ	42
इस्लाम धर्म के प्रमुख आधार	45

सन्देश

इस्लामी जगत के श्रेष्ठ विद्वान ह़ज़रत मौलाना अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी (रह़०) के क़लम से-

بسم الله الرحمن الرحيم

आ़लम की अ़िशा हो जिससे इशराक़—मोमिन की अज़ान निदा-ए-आफ़ाक़

नमाज़ के ऐ़लान और दअ़वत के लिए जो निदा (पुकार) शारेअ़ ने मुक़द्दर फ़रमाई है उस में सिर्फ़ नमाज़ के मक़ासिद और नमाज़ के मआ़नी व ह़क़ायक़ का इ़ज़्हार नहीं, बल्कि उस में इस्लाम के मक़ासिद, तौह़ीद के शआ़यर और दीन की रुह़ की भी पूरी वज़ाहत, बलाग़त, इख़्तिसार और ह़ुस्न व नग़मः के साथ इस तरह़ समो दी गयी है कि इस ऐ़लान ने जो (मुअ़ज़्ज़िन दिन में पाँच मर्तबः मस्जिद के मीनारों से बुलन्द करता है) इस्लाम की मुतअ़य्यन और ठोस दअ़वत की शक्ल अख़्तियार कर ली है। नमाज़ की यह निदा, जो सादगी व पुरवक़ारी का अजीब नमूना है, बहुत से ग़ैर मुस्लिमों के सीनों को इस्लाम के लिए खोल चुकी है और दूसरे मज़ाहिब व अद्यान की इ़बादात के एलान के तरीक़ों से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ है। यह वह मुन्फ़रिद और वाह़िद निदा है, जो हर क़िस्म के ज़ाहिरी इश्काल और आलात वग़ैरह की मदद से पाक और मह़फ़ूज़ है और इसमें दीन का लुब्बो लुबाब और ख़ुलासा आ गया है।

“अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुह़म्मदर्रसूलुल्लाह”

इस में नमाज़ में हाज़री की दअ़वत और उस का इ़ज़्हार है कि वह दुनिया व आख़िरत दोनों जगह फ़लाह़ का रास्ता है और उसके बिना फ़लाह़ किसी जगह से ह़ासिल नहीं की जा सकती। इन सब बातों की वजह से अज़ान एक ऐसी जामेअ़ और मुकम्मल दअ़वत और बलीग़ ऐ़लान बन गयी है जो क़ल्ब और अ़क़्ल दोनों को ब-एक वक़्त मुख़ातब करता है, मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम दोनों को मुतवज्जेह करता है, सुस्त आदमी में चुस्ती पैदा करता है और ग़ाफ़िल को होशियार व बेदार करता है।

नोट- प्रस्तुत लेख चूँकि उर्दू में था, इसलिए इसे उसी प्रकार केवल लिपी बदलकर लिख दिया गया है। ताकि लोग मौलाना के जज़बात को समझ सकें।

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत शाह वलीयुल्लाह देहलवी (रह़मतुल्लाहि अ़लैहि) इस मसले पर रोशनी डालते हुए लिखते हैं कि “हिक्मते इलाही इस की मुतक़ाज़ी थी कि अज़ान सिर्फ़ ऐ़लान और तम्बीह़ होकर न रह जाये बल्कि दीन के शआ़यर में दाख़िल हो जाये और गाफ़िल के लिए इस की ह़ैसियत महज़ तम्बीह की नहीं बल्कि दीन के तब्लीग़ व दअ़वत की भी हो और उसकी तअ़मील इताअ़त व फ़रमाबरदारी की अ़लामत और निशानी समझी जाये। इसी लिए ज़रूरी हुआ कि इस में ख़ुदा का ज़िक्र भी हो दोनों कलम-ए-शहादत हों, नमाज़ की दअ़वत हो, ताकि इस मक़सद की (जो ऊपर बयान किया गया) अच्छी तरह़ से तर्जुमानी हो सके”।

अफ़्सोस है कि वह आवाज़ और पुकार जो दुनिया के सारे मुल्कों में जहाँ भी मुसलमान बस्ते हैं और मस्जिदें मौजूद हैं पाँच वक़्त बुलन्द आवाज़ से दी जाती है और बाज़ सन्नाटे के ऐसे अवक़ात भी होते हैं, जैसे तुलूअ़ सुबह़ का वक़्त जिनमें इस आवाज़ के सिवा कोई बुलन्द आवाज़ नहीं होती इस तरह अज़ान और उसमें जो ऐ़लान किया जाता है और जो ह़क़ायक़ बयान किये जाते हैं और अक़ायद सामने आते हैं,उसकी तशरीह़ व तर्जुमानी बहुत से मुल्कों की ज़बान में जिनमें ख़ुद हमारा मुल्क ह़िन्दुस्तान, जो मुसलमानों और दूसरे मज़ाहिब की कसीर आबादी का मुल्क है वाजेह़ और आम फ़ह़्म तरीक़े पर नहीं की गयी या बहुत कम की गयी।

अज़ीज़े गिरामी **‘मोलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब’** न सिर्फ़ मुसलमानों के बल्कि मुल्क की अ़ज़ीम तर आबादी के जिसकी ज़बान हिन्दी है शुक्रिया के मुस्तह़िक़ है कि इन्होंने हिन्दी में अज़ान का तर्जुमः और मफ़्हूम और उस की दअ़वत और इ़ज़्हारे ह़क़ीक़त आसान हिन्दी में पेश की और तफ़्सील से इस पर रोशनी डाली।

उम्मीद है कि यह रिसाला हमारे ग़ैर मुस्लिम भाई और वह मुसलमान भी जो हिन्दी पढ़ते हैं और समझते हैं दिलचस्पी और लुत्फ़ के साथ पढ़ेंगे और जो पुकार बे समझे सुनते थे और उस पर उनको ग़ौर करने का भी मौक़ा नहीं मिला था। वह इस के माने व मफ़्हूम और इसकी दअ़वत व मुताल्बे को समझेंगे और फ़ायदा उठाएँगे।

अ़बुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी (अ़ली मियाँ)
नदवा (लखनऊ)

प्रस्तावना

بسم الله الرحمن الرحيم

एकेश्वरवाद की शिक्षा, जिसे सर्वप्रथम ह़ज़रत आदम (अ़लैहि़स्सलाम) ने दी थी और उनके बाद आने वाले सभी ईशदूत अपनी-अपनी भाषा में देते रहे और अन्त में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने भी इसी शिक्षा को पूर्ण रूप दिया तथा इ़बादत (उपासना) करने के तरीक़े जैसे- नमाज़, रोज़ः, ह़ज, ज़कात को सामूहिक रूप से करने को परमेश्वर की इच्छा बताया, ताकि बाद में कोई व्यक्ति अपने स्वार्थानुसार गढ़ न सके। जैसा कि पिछले ईशदूतों के लाये हुये ज्ञान के साथ हुआ कि संशोधन करते-करते उसका वास्तविक रूप ही बदल डाला। इसलिए सामूहिक रूप से समस्त मानव जाति को बताने के लिए कि हम केवल एक अल्लाह पर आस्था रखते हैं और उसी के नाम पर सारे कार्यों को छोड़ कर, उस के घर में एकत्रित होकर उसी की आज्ञानुसार उसके सम्मुख अपना शीश नवाते हैं, जिसे अज़ान कहने वाला "अल्लाहु अक्बर" के शब्दों से आरम्भ करते हुए कहता है कि मात्र वही स्तुति, उपासना, प्रार्थना और भक्ति का अधिकारी है, जो इस सृष्टि का सृष्टा है, उसी का नाम अ़रबी में 'अल्लाह' है।

अज़ान के सम्बन्ध में इस कथन को लेकर —

काँकर पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।।

कि मुसलमान अल्लाह को क्यों पुकारते हैं? क्या अल्लाह बहरा है जो मुसलमान उसे पुकारते हैं? यह बड़े ही आश्चर्य की बात है कि एक समझदार इन्सान इस प्रकार की बातेंबिना अध्ययन के कह दे, ऐसे विषय पर जो सूर्य की तरह प्रकाशवान हो कि उन्हें यह मालूम नहीं कि अल्लाह को बुलाया जाता है।

दूसरी धारणा हमारे कुछ भोले-भाले भाईयों की है, वह समझते हैं कि अज़ान में 'अल्लाहु अक्बर' जो कहा जाता है वह 'अक्बर' बादशाह को पुकारते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। अक्बर का अर्थ होता है 'महान' और अज़ान में यह शब्द अल्लाह के लिए प्रयोग होता है।

अज़ान में समस्त मानव जाति को सम्बोधित करते हुए कहा जाता है कि

वही अल्लाह सर्वमहान है जो तमाम सृष्टि का सृष्टा है।

धर्म की वास्तविकता-

ईश्वरीय आदेशानुसार मानव जीवन पद्धति का नाम धर्म है, जिसके लिए आवश्यक है कि वह विद्वानों, ज्ञानियों और जन साधारण सब के लिये समान हो। सत्य स्वयं सिद्ध होता है उसको प्रमाणित करने के लिये किसी गूढ़ दर्शन की आवश्यकता नहीं होती। एकेश्वरवाद का सिद्धान्त भी ऐसा ही है जो स्वयं सिद्ध है। इस के विरुद्ध कोई इसे स्वीकार ही नहीं कर सकता कि अल्लाह (परमेश्वर) के समान कोई और है।

सर्वश्रेष्ठ प्राणी का उद्देश्य-

शुद्ध बुद्धि जिस प्रकार अल्लाह (परमेश्वर) के अस्तित्व को स्वीकार करती है उसी प्रकार ईश्वरीय शिक्षा, ज्ञान और आदेश की माँग भी करती है अल्लाह (परमेश्वर) सर्वज्ञानी है, ऐसा नहीं कर सकता कि सम्पूर्ण सृष्टि और उसमें मनुष्य जैसे विशिष्ट सर्वश्रेष्ठ प्राणी को बिना किसी उद्देश्य के पैदा कर दिया हो, बल्कि इसके उद्देश्य को परमेश्वर ही बता सकता है जिस ने इस को पैदा किया।

अतः परमेश्वर ने मानव जाति के प्रारम्भ से ही मनुष्यों में से अपने रसूल (दूत) नियुक्त करता रहा और उन पर शिक्षा, आदेश और नियम नाज़िल (अवतरित) करता रहा, जिसका नाम विभिन्न भाषाओं में अनेक था परन्तु आस्थाएँ एक ही थीं, अपने सर्वस्व को अल्लाह के अधीन कर देना।

प्रस्तुत पुस्तक में अज़ान के शब्दों का अनुवाद और व्याख्या विस्तार पूर्वक किया गया है तत्पश्चात नमाज़ का उल्लेख प्रश्न उत्तर के रूप में करने के बाद इस्लाम का परिचय तथा इस्लाम, मुसलमान और काफ़िर से सम्बन्धित समाज में फैलाई गई भ्रांतियों का उत्तर अच्छे अन्दाज़ में दिया गया है, ताकि पाठक गण अज़ान की वास्तविकता से परिचित होकर अपने पैदा करने वाले मालिक के समक्ष नत्मस्तक होकर उसकी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने का संकल्प ले सकें।

अन्त में हम जनाब इब्राहीम साहब के शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने इस के प्रकाशन में सहयोग किया।

मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी, लखनऊ
20 अप्रैल 1997

भाग-1

अज़ान का अर्थ एवं व्याख्या

अज़ान का आरम्भ

तमाम मानव जाति को कल्याणकारी बनाने के लिए अन्तिम महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अल्लाह की अ़िबादत (स्तुति) को सामूहिक रूप से करने का आदेश दिया तो यह प्रश्न उठा कि किस प्रकार लोगों को अल्लाह की स्तुति या उपासना (अ़िबादत) के लिये एकत्रित किया जाये। इस के लिये ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने जो अज़ान सिखाई उसका उद्देश्य एक तो नमाज़ के लिये लोगों को इकट्ठा करना है और दूसरा इस्लाम का संक्षिप्त परिचय जिसे एक पुकराने वाला मस्जिद में किसी ऊँचे स्थान या माइक से इस प्रकार शब्दों को कहता है जिसका अर्थ और व्याख्या नीचे की पंक्तियों से स्पष्ट हो रहा है।

अज़ान के शब्द

1. اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ । اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ।

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर। अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर।

अनुवाद- अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।
अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।

2. اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ । اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ।

अशहदुअल्लाइलाह इल्लल्लाह अशहदुअल्लाइलाह इल्लल्लाह

अनुवाद- मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं।

3. اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ । اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ।

अशहदु अन्न मुह़म्मदर्रसूलुल्लाह अशहदु अन्न मुह़म्मदर्रसूलुल्लाह

अनुवाद- मैं गवाही देता हूँ कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं।
मैं गवाही देता हूँ कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं।

4. حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ । حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ।

ह़य्य अ़लस्सलाः ह़य्य अ़लस्सलाः

अनुवाद- आओ नमाज़ की ओर, आओ नमाज़ की ओर।

5. حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ । حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ।

ह़य्य अ़लल्फ़लाह़ ह़य्य अ़लल्फ़लाह़

अनुवाद- आओ भलाई की ओर, आओ भलाई की ओर।

6. اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ । اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ ।

अस्सलातु ख़ैरुम् मिनन् नौम। अस्सलातु ख़ैरुम् मिनन् नौम।

अनुवाद- नमाज़ सोने (नींद) से बेहतर है, नमाज़ सोने (नींद) से बेहतर है।

नोट- ऊपर के यह शब्द जो घेरे में हैं, केवल सुबह़ की अज़ान में कहे जाते हैं। दूसरे वक़्तों की अज़ान में नहीं कहे जाते।

7. اَللّٰهُ اَكْبَرُ । اَللّٰهُ اَكْبَرُ ।

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

अनुवाद- अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सबसे बड़ा है।

8. لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ।

लाइलाह इल्लल्लाह

अनुवाद- अल्लाह के अतिरिक्त कोई मअ़बूद (स्तुति के योग्य) नहीं।

अज़ान की व्याख्या

रात्रि के अन्धकार में यह दुनिया का मुसाफ़िर जिसे इस जीवन को त्याग कर एक नई मन्ज़िल की ओर जाना है, ठन्डी हवाओं की गोद में आराम करने लगता है, कि अचानक सितारों से बुझते हुए चिरागों की तरह धुआँ सा निकलने लगता है और सूर्य भी पूर्व के झरोकों से झाँकने की तैयारी करने लगता है तो बिस्तर

की सिल्वटें सोने वाले का दामन थाम कर कहती हैं कि एका एकी बेवफ़ाई न करना, इतने में ही किसी मिनारे या ऊँचे स्थान से आवाज़ आने लगती हैं:-

पहले शब्दों की व्याख्या-

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अकबर-अल्लाहु अकबर। अल्लाहु अकबर-अल्लाहु अकबर।

अनुवाद- अल्लाह सबसे बड़ा (सर्वमहान) है अल्लाह सबसे बड़ा (सर्वमहान) है।
अल्लाह सबसे बड़ा (सर्वमहान) है अल्लाह सबसे बड़ा (सर्वमहान) है।

व्याख्या-

यहाँ पर दो शब्द अ़रबी भाषा के प्रयुक्त हुये हैं। एक 'अल्लाह' दूसरा 'अकबर' "अल्लाह" शब्द उस शक्ति के लिये प्रयोग होता है जो सम्पूर्ण सृष्टि का सृष्टा, पालनहार और स्वामी है और अकबर का अर्थ होता है महान।

तमाम इन्सानों को अ़ज़ान के पहले शब्दों में सम्बोधन-

अज़ान कहने वाला अर्थात मुअज़्ज़िन इस धरती पर बसने वाले सभी मनुष्यों को सम्बोधित करते हुए कहता है- कि "ऐ मनुष्यों! वही अल्लाह सर्वमहान है जो अपने गुण व कर्म में अद्वितीय है, वह स्वयंभू है, नित्य है, अनादि और अनन्त है, अक्षय और अमर है, निराकार और निर्दोष है, सर्वगुण सम्पन्न है, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है, सर्वव्याप्त और अंतर्यामी है, सर्वकर्ता और सर्वरचयिता है।

सर्व जगत तथा सारी सृष्टि को उसी ने उत्पन्न (पैदा) किया है, जीव और प्राकृति भी उसी की सृष्टि हैं, स्वयंभू तथा अनादि और अनन्त होने में कोई उसका साझीदार नहीं, यह केवल उसी के गुण हैं, वह किसी में अवतरित नहीं होता, न ही किसी प्राणी का रूप धरण करता है (यह उसकी पवित्रता के विरुद्ध है) इसलिए वह सर्वमहान है उस जैसा कोई कर्ता नहीं।

अल्लाह सब से बड़ा है-

अल्लाह अपने सृष्टि कार्य के लिये किसी सामग्री और साधन का अपेक्षी नहीं, प्रकृति और जीव भी उसी ने पैदा किये, अर्थात दुनिया की सारी चीज़ें तुच्छ

हैं केवल अल्लाह (परमेश्वर) ही सबसे बड़ा है उसके सामने सब दीन हीन हैं, सबके लिये अपने को बड़ा कहना दोष है, न वह किसी के द्वारा जाना गया और न उसके कोई सन्तान है।

मनुष्य का धोखा-

परन्तु मनुष्य अल्लाह (परमेश्वर) की बनाई हुई वस्तुओं की बड़ाई को देख कर अचम्भे में पड़ जाता है, उसकी धाक मनुष्य के दिल में बैठ जाती है जैसे यह ऊँचे-ऊँचे पहाड़ तेज़ धारे वाली नदियाँ बड़े-बड़े डरावने पशु भयानक वन और भयंकर आँधियाँ, भूचाल और घंघोर घटाएँ, बिजली की चमक और बादल की गरज, यह सूरज और चाँद सितारों को चक्कर लगाते देखना, हुकूमतों का उलट इन सबसे प्रभावित होकर इन्हीं वस्तुओं की प्रशंसा करने का प्रयास करने लगता है तो मुअज़्ज़िन याद दिलाता है कि यह सारी वस्तुएँ अल्लाह के सामने छोटी हैं। इसलिए कि वही अकेला इन सब चीज़ों का बनाने वाला है, जहाँ कहीं से भी लाभ या हानि दिखाई देती है वह सब अल्लाह की ही ओर से है। इसलिए अल्लाह के सिवा कोई दूसरा किसी की ज़रुरतों को पूरा नहीं कर सकता, वही सबकी देखभाल करने वाला, कठिनाइयों से निकालने वाला, मुसीबतों से छुट्कारा दिलाने वाला और हर एक की पुकार को सुनने वाला है, अतः केवल अल्लाह ही बड़ा है। बड़े से बड़ा साधु, सन्त, पीर, फ़क़ीर पैग़म्बर या दूत भी अल्लाह से बहुत छोटे हैं, वह अल्लाह के किसी फैसले को टाल नहीं सकते इसलिए कि वही अल्लाह सबसे बड़ा (सर्वनहान) है उसके सामने सब बेबस हैं, चाहे कोई बड़े से बड़ा देवता हो या फ़रिश्ता यह सब जो कुछ भी करते हैं, अल्लाह के इशारे पर ही करते हैं, इसलिए केवल अल्लाह ही को पुकारना चाहिए कि वही सबसे बड़ा (सर्वमहान) है।

जब वही अल्लाह (परमेश्वर) सर्वमहान है तो उसी की आज्ञा पालन के लिये ध्यान आकृष्ट कराते हुए फिर दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहता है:-

व्याख्या-

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह। अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह।

अनुवाद- "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह (परमेश्वर) के अतिरिक्त कोई उपासना

के योग्य नहीं"।

व्याख्या- मुअज़्ज़िन कहता है कि मैं गवाही देता हूँ कि जब अल्लाह ही सर्वमहान तथा सर्वशक्तिमान है, तो जो भी प्राणी और वस्तुएँ हैं चाहे वह भौतिक हों या अभौतिक वह सब अल्लाह की ही पैदा की हुई हैं, जो उस परमेश्वार के अधीन हैं। उन में कोई भी स्वधीन नहीं, तो फिर सृष्टि का कोई प्राणी अथवा वस्तु उपास्य और पूज्य कैसे हो सकती है? सब उसी की उपासक और पूजक ही हो सकती हैं।

अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं-

जब अल्लाह (परमेश्वर) के गुण और कर्म में कोई उसके समान नहीं, कोई उसका साझीदार नहीं वही सबका जन्मदाता, पालनकर्ता और स्वामी है, तो उसके अतिरिक्त दूसरा कोई पूजा, उपासना और प्रार्थना का अधिकारी भी नहीं हो सकता। उपासना तो केवल अल्लाह (परमेश्वर) के लिये ही है चाहे कोई भी हो, कैसा ही गुणवान, कीर्तिमान हो वह उपास्य नहीं हो सकता।

जिस प्रकार परमेश्वर (अल्लाह) किसी प्राणी का रूप धारण नहीं करता और न ही वह किसी कार्य के लिए शरीर धारण करने पर बाध्य है, उसने जब केवल अपनी इच्छा शक्ति से इतनी बड़ी सृष्टि की रचना कर दी तो किसी कार्य के लिये उसे शरीर धारण करने की क्या आवश्यकता, वह अपनी इच्छा शक्ति से सब कुछ कर सकता है, इसी प्रकार वह पति, पत्नी आदि संबन्धों से मुक्त है, ऐसा बन्धन परमेश्वर की महानता और पवित्रता के विरूद्ध है। अतः मुअज़्ज़िन पुकार कर कहता है, ऐ मनुष्यों सुन लो कि उस अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, इसलिए कि समस्त सृष्टि और उस में जो कुछ है उसी का पैदा किया हुआ है।

प्रकृति (Nature) भी उसी की उपासक है-

वास्तविकता यह है कि अल्लाह (परमेश्वर) के सम्मुख अपनी हीनता और दासता प्रकट करना और आज्ञा का पालन करना, इस दृष्टि से देखिये तो यह पृथ्वी, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य, पर्वत, समुद्र, वृक्ष, पशु-पक्षी सब अल्लाह (परमेश्वर) के ही उपासक, दास और भक्त हैं, क्योंकि सब अल्लाह के निर्धारित प्राकृतिक नियम (Nature law) के अनुसार ही कार्य कर रहे हैं। वही परोक्ष (ग़ैब) का

जानने वाला और लाभ व हानि का देने वाला है। वह यदि लाभ या हानि पहुँचाना चाहे तो कोई रोक नहीं सकता, वही हमारी सुनता है उसके अतिरिक्त किसी और से दुआ माँगना, या किसी दूसरे को साझीदार समझना शिर्क है।

केवल अल्लाह ही के आगे सर झुकाये-

केवल अल्लाह ही इसका हक़दार है कि हम उसके सामने अपना सर झुकाएँ, उसकी अिबादत (उपासना) करें और उसके आगे हाथ बाँध कर खड़े हों, उसके सिवा कोई दूसरा नहीं जिसकी पूजा की जाये। यह हक़ भी केवल अल्लाह का ही है कि हम उसके नाम पर मन्नत माँगे या भेंट चढ़ाएँ उस के सिवा किसी की मन्नत माँगना या किसी दूसरे के नाम पर भेंट चढ़ाना, देवी, देवता, मन्त्रों, टोना, टोटकों और गन्डों के पाखन्डों पर विश्वास रखना भी शिर्क है, वही अल्लाह उपास्य है उसके अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं।

अब उपासना कैसे की जाये या अल्लाह किन कार्यों से प्रसन्न होगा और किन कर्यों के करने से क्रोधित होगा। इसे केवल उस अल्लाह की ओर से नियुक्त किये हुए रसूल (संदेष्टा) ही बता सकते हैं, इसलिए मुअज़्ज़िन अन्तिम महाईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का परिचय कराते हुए कहता है:-

तीसरे शब्दों की व्याख्या-

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللّٰهِ — **अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह।**

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللّٰهِ — **अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह।**

अनुवाद- "मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के (नियुक्त किये हुए अन्तिम) रसूल (संदेष्टा) हैं"।

"मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के (नियुक्त किये हुए अन्तिम) रसूल (संदेष्टा) हैं।"

व्याख्या-

परमेश्वर ने मनुष्यों को असीम बुद्धि, शक्ति और ज्ञान तथा साधन प्राप्त करके अन्य प्राणियों के समान आज़ाद नहीं छोड़ दिया बल्कि वह आदिकाल से मनुष्यों में ही से अपना दूत नियुक्त करता रहा, और उसको अपनी ओर से

जीवन व्यतीत करने का नियम प्रदान करता रहा, चूँकि सारा संसार परमेश्वर का है, और सारे मनुष्य भी परमेश्वर के हैं।

रसूल (दूत) परमेश्वर का रूप नहीं होते-

अल्लाह आवश्यकतानुसार समय-समय पर हर देश और हर जाति में अपने दूत नियुक्त करता रहा और उसके द्वारा आदेश व नियम प्रदान करता रहा और अन्त में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा अन्तिम ईश्वरीय ज्ञान पवित्र कुर्आन के रूप में प्रदान किया।

यह सब रसूल इन्सान ही थे, इन में से कोई परमेश्वर का रूप नहीं था। परमेश्वर कभी मनुष्य या किसी और रूप में धरती पर नहीं आया। जिन लोगों को परमेश्वर का रूप कहा जाता है वह सब मनुष्य ही थे। यह लोगों की भूल है, अल्लाह तो केवल एक है, उसका कोई रूप नहीं न वह कोई रूप धारण करता है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अन्तिम महाईशदूत हैं-

इस प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) आख़िरी रसूल हैं जिनके विषय में सभी ग्रन्थों और ईशदूतों ने भविष्यवाणी की है जैसे वेदों में पं० वेद प्रकाश उपाध्याय के अनुसार 'नराशंस' के नाम से और अन्य पुस्तकों में 'पैराक्लीट' और 'फ़ारकलीत' तथा 'मैत्रेय' और 'अहमद' के नाम से कि जब अन्तिम महाईशदूत आ जायेगा तो केवल उसी के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करने वाला कल्याणकारी हो सकेगा, उसी का उल्लेख करते हुए मुअज़्ज़िन कहता है कि मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अन्तिम महा ईशदूत हैं, इसलिए अनिवार्य हो जाता है कि जो बातें उन्होंने बताई हैं उनका पालन किया जाये और जिस काम से मना किया है उसे छोड़ दिया जाये।

(विस्तार के लिए लेखक की पुस्तक "अन्तिम सन्देष्टा" कब कहाँ और कौन देखी जा सकती है)

चौथे शब्द की व्याख्या-

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ

हय्य अलस्सलाः। हय्य अलस्सलाः।

अनुवाद- "आओ नमाज़ की ओर, आओ नमाज़ की ओर।"

व्याख्या- अब मुअज़्ज़िन उन लोगों को पुकार कर कहता है जिन्होंने इस्लाम के

पहले स्तंभ अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह, व अशहदुअन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह को स्वीकार करते हुए कहा कि, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और मैं गवाही देता हूँ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) परमेश्वर के अन्तिम संदेष्टा (दूत) हैं, पहले दूसरे स्तंभ का सम्बन्ध यह है कि पहला जिस बात की मौखिक प्रतिज्ञा है दूसरा उसका व्यवहारिक प्रमाण है, मुअज़्ज़िन यह आवाज़ देता है कि वह सर्वथा अल्लाह (परमेश्वर) का अधीन है, उसी का उपासक, उसी का आज्ञाकारी और उसी का भक्त हैं।

नमाज़ उपासना और भक्ति की सर्वश्रेष्ठ विधि है जिसमें स्तुति, प्रशंसा, कृतज्ञता, सुमिरन, चिंतन और प्रार्थना याचना भी है अर्थात उपासना और भक्ति के जितने प्रकार हैं वह सब नमाज़ में एकत्रित हो जाते हैं।

नमाज़ की विधि-

परमेश्वर निराकार और अदृश्य है जो कल्पना से भी परे है परन्तु नमाज़ इस विश्वास और इस विधि से पढ़ी जाती है कि मानो परमेश्वर सम्मुख है वह अल्लाहु अकबर (परमेश्वर सर्वमहान है) कह कर हाँथ बाध लेता है और परमेश्वर की स्तुति, प्रशंसा और उससे प्रार्थना करने लगता है। फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए धरती पर अपना सर्वश्रेष्ठ माथा टेक देता है। (जिसे सज्दः कहते हैं) और कहता है कि "सुब्हान रब्बियल अअ़ला" निर्दोष और त्रुटि रहित है मेरा अल्लाह फिर 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए खड़ा हो जाता है। इस प्रकार कभी दो बार कभी तीन बार और कभी चार बार ऐसा ही करता है।

नमाज़ का आदेश-

नमाज़ प्रत्येक बालिग़ व्यक्ति पर अनिवार्य है। इसका पढ़ना जैसे पुण्य है, वैसा ही न पढ़ने वाला पापी होता है। वैधानिक रूप से दिन में पाँच बार निश्चित समय पर मस्जिद में सामूहिक रूप से पढ़ने का हुक्म (आदेश) दिया गया है इसलिये कि इस्लाम समता और बन्धुत्व का धर्म है। मस्जिद में धनी और निर्धन का, स्वामी और सेवक का, अधिकारी और कर्मचारी का, जाति और पेशे का कोई भेद-भाव नहीं होता, सब एक पंक्ति में खड़े होकर नमाज़ पढ़ते हैं इससे मनुष्य भक्तिमय बन जाता है जिससे यह हर प्रकार के दुराचार कार्यों से रुक जाता है।

पाँचवें शब्द की व्याख्या-

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ، حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

हय्य अलल्फ़लाह। हय्य अलल्फ़लाह।

अनुवाद-

"आओ कामियाबी की ओर, आओ कामियाबी की ओर"।

"आओ कामियाबी की ओर, आओ कामियाबी की ओर"।

व्याख्या- नमाज़ की ओर बुलाने के तुरन्त बाद मुअज़्ज़िन कहता है 'आओ कामियाबी की ओर' अर्थात अब परमेश्वर को प्रसन्न करने और अपनी मुक्ति का रास्ता यह है कि अ़मल करने में ही केवल कामियाबी है, उसके अतिरिक्त यदि हम अपने बुद्धि से दूसरे स्थान पर कामियाबी ढूँढेंगे तो अन्धकार में फँसते ही चले जायेंगे इसलिए अब नमाज़ का समय हो गया है। इस समय जो इसका पालन करेगा वही मुक्ति पायेगा।

केवल सुबह़ की अज़ान में अज़ान कहने वाला व्यक्ति एक शब्द और बढ़ा देता है और कहता है।

छठवें शब्द की व्याख्या-

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ ، اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

अस्सलातु ख़ैरुम् मिनन् नौम। अस्सलातु ख़ैरुम् मिनन् नौम।

अनुवाद- "नमाज़ सोने (नींद) से बेहतर है, नमाज़ सोने (नींद) से बेहतर है"।

व्याख्या- ऐ ठन्डी हवाओं की गोद में सोने वाले और स्वप्न में खोये हुए मुसाफ़िर तेरी इस मीठी नींद से कहीं बेहतर है नमाज़ का पढ़ना, जो तुझे मौत के समय के संकट से निकालेगी, क़ब्र के अज़्दहों से छुट्कारा दिलायेगी और मैदाने हश्र (महाप्रलय) के दिन जन्नत (स्वर्ग) तक पहुँचाने का माध्यम बनेगी। इसलिए तू अपनी इस थोड़ी सी नींद को कुर्बान कर दे बड़ी कामियाबी को प्राप्त करने के लिये।

सातवें शब्दों की व्याख्या-

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर।

लाइलाहइल्लल्लाह।

अनुवाद- अल्लाह सबसे बड़ा (सर्वमहान) है, अल्लाह सबसे बड़ा (सर्वमहान) है।
अल्लाह सबसे बड़ा (सर्वमहान) है। अल्लाह सबसे बड़ा (सर्वमहान) है।
अल्लाह (परमेश्वर) के अतिरिक्त कोई मअ़बूद (स्तुति के योग्य) नहीं।

अल्लाह ही सर्वमहान है-

परमेश्वर "विश्वास" में और अधिक बल देने के लिए फिर दोबारा मुअज़्ज़िन कहता है कि ऐ आविष्कारों से चकित होने वालों सोने चाँदी धन दौलत में रीझने वालो तुमने यदि परमेश्वर को छोड़ कर जीवन यापन किया तो दुनिया व आख़िरत (लोक-परलोक) कष्टदायी बनेगी, इस लिए कि वही अल्लाह सर्वमान है, जो तुम्हारा और सर्वजगत का स्वामी और अमर है तो उसके अतिरिक्त किसी और की उपासना कैसे हो सकती है इसलिए केवल उसी से प्रार्थना, याचना करो और उसी के सम्मुख सर झुकाओ। इस प्रकार वही अल्लाह सर्वमहान है जिसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं।

अज़ान में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की चर्चा

"अश्हदु अन्न मुह़म्मदर्रसूलुल्लाह"

"मैं गवाही देता हूँ कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं।"

अज़ान में यह कहकर बता दिया गया है कि मुह़म्मद अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) हैं इस लिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का जीवन सम्बन्धी विधान अ़मली रूप में मौजूद है। इसीलिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की चर्चा अज़ान में की गई है, जिसकी एक झलक इस प्रकार है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के जीवन की एक झलक-

महाईशदूत का जीवन एक पिता हीन शिशु की अवस्था से आरम्भ हुआ। आप माता के गर्भ ही में थे कि पिता का देहान्त हो गया। आप केवल छः साल के थे कि माता की गोद से भी वंचित हो गये। आप का बाल्यकाल मक्का नगर के पहाड़ी मैदानों में बकरियों और ऊँटों के चराने में व्यतीत हुआ। युवाकाल वाणिज्य व्यापार में बीता। चालीस साल की आयु में आप ईशदूत पर नियुक्त हुये,एक धर्म भ्रष्ट असभ्य और अव्यवस्थित देश की धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक अवस्था का सुधार कितना कठिन और महान कार्य था, वह भी ऐसी स्थिति में कि आप के साथ कोई शक्ति न थी। आप अकेले भी थे और सर्वथा साधन हीन भी थे, इस कार्य भार के बाद तो आप के पास जीविका-उपार्जन के लिए समय ही न रह गया था, इसी अवस्था में आप को मक्का त्याग करके मदीना जाना पड़ा।

इस प्रकार आप के पास जो कुछ भी था वह भी मक्के ही में रह गया। मदीने में आप 6 महीने तक एक मदीना निवासी ह़ज़रत अबू अय्यूब अन्सारी के अतिथि रहे।

अपने लिये घर बनाने से पहले महा ईशदूत को नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद की चिंता थी, मस्जिद बनी, उसके बनाने में अपने अनुयायियों के साथ आप भी मज़दूर थे। दीवार कच्ची ईटों की, खम्भे खजूर के तनों और छप्पर के

पत्तों के, फ़र्श मिट्टी का, जिस पर बाद में कंकरियां डाल दी गईं ताकि पानी बरसने पर कीचड़ न हो जाए।

आप का घर-

इसी मस्जिद से मिली हुई महाईशदूत के रहने के लिये कोठरियाँ बनाई गईं, पहले दो कोठरियाँ बनीं, फिर कुछ कोठरियाँ और बनीं, उसमें कुछ की दीवार ईटों की थी और कुछ खजूर की टट्टियों की, उनकी लम्बाई दस दस हाथ की थी और चौड़ाई सात सात हाथ की, दीवार इतनी नीची थी कि खड़ा आदमी हाथ से छप्पर छू ले, छप्पर खजूरों के पत्तों का था। दरवाज़ों में केवाड़ की जगह कम्बल पड़े हुए थे, रात को दिया नहीं जलता था।

महाईशदूत ऐसे साधु सन्यासी न थे जैसे साधु- सन्यासी हम अपने देश में देखते हैं या जिन के वर्णन पुस्तकों में पढ़ते हैं, आप गृहस्थ थे पत्नी सन्तान वाले थे, समाज के बीच रहते थे, आप शिक्षक भी थे उपदेशक भी, सुधारक भी, सैनिक भी सेनापति भी, नियत निर्याता भी थे और न्यायधीश भी, अ़रब के विजेता भी थे और शासक भी। क्या कभी कोई ऐसा साधु सन्यासी भी संसार में हुआ?

शासक के रूप में-

अ़रब के शासक हो जाने के बाद भी आप के जीवन में नाम मात्र का भी परिर्वतन नहीं हुआ, राजमहल नहीं बना, सिंहासन नहीं बना, मुकुट नहीं बना, कोठरियाँ भी गिरकर नई नहीं बनीं, अब भी वही खजूर के पत्तों का छप्पर था, वही दरवाज़ों पर केवाड़ की जगह कम्बल के पर्दे थे, उसी प्रकार रात को घर में दीपक न जलते थे, मस्जिद भी वही थी। महा ईश-दूत (सल्ल०) इसी में बैठकर अ़रब पर शासन करते थे, क्या संसार में कोई ऐसा शासक भी हुआ है?

वस्त्र की दशा-

महाईशदूत का साधारण पहनावा केवल कुर्ता और तहमद होता था। महा ईश-दूत की धर्म पत्नी ह़ज़रत उम्मे सल्मा (रज़ि०) कहती हैं कि अल्लाह के रसूल जो कपड़ा पहना करते थे उन में आपको कुर्ता अधिक पसन्द था। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) आधी पिंडुली तक तहमद बाँधा करते थे, आप

फ़रमाया करते थे कि ह़ज़रत रसूलुल्लाह (सल्ल०) का तहमद भी इतना ही ऊँचा होता था। (शमाइले तिर्मिज़ी)

भोजन की अवस्था-

महा ईशदूत (सल्ल०) के एक सह़ाबी नुअ़मान बिन बशीर ने एक दिन अपने साथियों से कहा—तुम लोग जितना चाहते हो खाते पीते हो परन्तु मैंने तुम्हारे नबी (सल्ल०) को देखा है कि उनको पेट भर सूखी खजूरें भी उपलब्ध न थीं। (तिर्मिज़ी)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि०) महा ईशदूत के चचा ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) के पुत्र थे वह कहते हैं कि महा ईश-दूत (सल्ल०) के घर में कई-कई रातें इस अवस्था में व्यतीत हो जाती थीं कि आप और आप के घर वाले भूखे सो रहते थे, कोई चीज़ खाने की रहती हीं न थी। आप के घर वालों की भोजन सामग्री अधिकांश जौ की रोटी होती थी। (तिर्मिज़ी)

बिस्तर की अवस्था-

महाईशदूत की धर्म पत्नी ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि०) कहती हैं कि अल्लाह के रसूल जिस बिस्तर पर सोया करते थे वह चमड़े का था और उसमें खजूर की छाल भरी हुई थी, आप की दूसरी धर्म पत्नी ह़ज़रत हफ़सा (रज़ि०) से पूछा गया कि तुम्हारे घर में अल्लाह के रसूल का बिस्तर कैसा था उन्होंने बताया कि एक कम्बल था जिसको हम दोहरा करके बिछा देते थे आप इसी पर सोते थे। एक दिन हमने सोचा इसे चार तह कर दें तो ये कुछ और नर्म हो जाएगा, यह सोच कर हमने चार तह कर दिया प्रातः समय आपने पूछा— तुमने रात को क्या बिछा दिय था? हमने कहा— आप का वही बिस्तर था हमने उसको चार तह कर दिया था ताकि नर्म हो जाए। आप ने फ़रमाया इसको फिर पहले ही की तरह कर दो, इसकी नर्मी ने आज रात को मुझे नमाज़ से रोक दिया। (तिर्मिज़ी)

आप की दानशीलता-

अ़रब के शासक का और ऐसा साधूमय जीवन! इसके साथ आप कितने दानशील थे, कि महाईश दूत (सल्ल०) के चचा ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) कहते हैं

कि महा ईश दूत ने जीवन भर किसी याचक की याचना के उत्तर में 'नहीं', शब्द का प्रयोग नहीं किया। (बुख़ारी)

अपरिचित लोग भी महाईशदूत की दानशीलता से परिचित थे और वह आप से इस प्रकार दान मांगते थे कि उस प्रकार क़र्ज़ख़ाह क़र्ज़ नहीं मांगता। एक बार आप नमाज़ पढ़ने जा रहे थे कि एक देहाती आया कहने लगा मेरी एक आवश्यकता रह गई है उसे पूरी कर दीजिए नहीं तो मैं भूल जाऊँगा।

आप उसे घर ले गए और उसकी आवश्यकता पूरी कर के आए फिर नमाज़ पढ़ी। (बुख़ारी)

महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इस बात को स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह एक मनुष्य एक और धर्म एक है। धर्म एक जो ईश्वरीय विधान पर आधारित है जिसमें वंश, वर्ण, देश, जाति के आधार पर न कोई बड़ा है न कोई छोटा न कोई पवित्र है न कोई अपवित्र। प्रधानता है तो ईश्वर भक्ति और सदाचार एवं अच्छे चरित्र के आधार पर।

इस प्रकार ऊपर के विस्तार से यह बात सिद्ध हो जाती है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अन्तिम महाईशदूत थे।

जीवन विधान-

महाईशदूत (सल्ल०) ने मानव जाति को जीवन के एक नवीन ध्येय, नवीन दृष्टि कोण और नवीन विधि से अवगत किया। आप से पहले मनुष्य दो वर्गो में बँटे हुए थे एक वर्ग ने सांसारिक जीवन ही का लक्ष्य बना लिया था। वह सब कुछ इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए करता था। दूसरे वर्ग ने सांसारिक जीवन से विरक्ति ग्रहण कर ली थी। महा ईश-दूत ने ऐसे जीवन लक्ष्य और जीवन विधि से अवगत किया जिसमें लोक और परलोक दोनों का समन्वय था, आपने जीवन का लक्ष्य तो बनाया परलोक को परन्तु लौकिक जीवन से विरक्ति ग्रहण नहीं की, इतना ही नहीं, संसार से विरक्ति को इस्लाम के विरुद्ध ठहराया।

आपने यह तथ्य समझाया कि ईश्वर ने संसार को इसलिए नहीं बनाया है कि मनुष्य उसका परित्याग करके सन्यासी बन जाये और जंगलों गुफ़ाओं या मठों में जा बैठे, उसको परिवार के भरण पोषण के लिए धन भी कमाना चाहिए। समाज

और शासन का संचालन करना चाहिए और इन सब के साथ परलोक को अपना अंतिम ध्येय मान कर जीवन व्यतीत करना चाहिए। इस ध्येय से मनुष्य का परलोक ही सुखमय न होगा, इसलिए कि मनुष्य को इसकी चिंता लगी रहेगी कि वह संसार ही का होकर न रह जाए कि उसका परलोक जीवन नष्ट हो जाए, इसलिए वह सत्यवादी होगा, न्यायशील होगा, सदाचारी होगा, त्यागी या परोपकारी होगा, अत्याचार, दुराचार, तथा अधिकार चेष्टा से बचेगा।

अ़रब देश पर अधिकार-

सारे अ़रब देश पर महाईशदूत का अधिकार स्थापित हो गया, चारों ओर से मदीने में धन आने लगा, मुसलमानों की निर्धनता दूर हो गई, वह सुखी जीवन व्यतीत करने लगा। महाईशदूत की धर्म पत्नियों का सारा जीवन रूखा-सूखा खाते, उपवास करते, और फटा पुराना पहनते व्यतीत हुआ था, वह भी मनुष्य थीं वह भी स्वभावतः सुखी जीवन की अभिलाषा रखती थीं।

अतः उन्होंने महाईशदूत (सल्ल०) से प्रार्थना की कि अब उनको भी अच्छा खाने पहनने को मिले। परन्तु महाईशदूत (सल्ल०) इसके लिए तैयार न हुए कि अपने जीवन में किसी प्रकार का परिवर्तन करें। अतः जब धर्मपत्नियों ने अपनी माँग पर आग्रह किया तो महाईशदूत (सल्ल०) ने रुष्ट होकर प्रतिज्ञा कर ली कि आप एक महीने तक उनसे अलग रहेंगे। इस प्रतिज्ञा के अनुसार आप ने एक महीने के लिए पृथकता ग्रहण कर ली।

ह़ज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की कोठरी के ऊपर एक छोटा सा कोठा था, आप उसी में रहने लगे। लोगों में यह भ्रम फैल गया कि आपने अपनी धर्मपत्नियों को तलाक़ दे दी। आपकी एक धर्मपत्नी ह़ज़रत ह़फ़्सा, ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) की पुत्री थीं, वह महा ईश-दूत से भेंट करने आये तो देखा महाईशदूत केवल एक लुंगी बांधे हुए हैं। एक चारपाई पर सरहाने एक तकिया रखा हुआ है जिसमें खजूर की छाल भरी हुई है, एक तरफ़ मुट्ठी भर जौ रखा हुआ है। कुछ पानी की छोटी मशक हैं। जो महाईशदूत (सल्ल०) के सर के पास लटक रही हैं।

ह़ज़रत उ़मर महाईशदूत के जीवन से कुछ अनभिज्ञ न थे फिर भी इस हृदयविदारक दृश्य से इतने प्रभावित हुए कि उनकी आँखों से आँसू जारी हो गये।

महाईशदूत (सल्ल०) ने रोने का कारण पूछा— उन्होंने कहा— ऐ अल्लाह के रसूल! मैं क्यों न रोऊँ? आपके शरीर पर चारपाई के बाध के चिह्न पड़े हुए हैं। यह आपके सामान की कोठरी है और उसमें जैसा कुछ सामान है उसे देख रहा हूँ। शाम और ईरान के सम्राट क़ैसर और किसरा तो सांसारिक सुख विलास का भोग करते हैं और आप इस प्रकार रहते हैं?

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ईशभक्ति-

महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आचार-व्यवहार में सर्वप्रथम वर्णनीय आपकी ईश्वर भक्ति है। जिस मनुष्य का जो जीवन लक्ष्य होता है। यदि वह अपने लक्ष्य में सच्चा होता है तो उसका कार्य-व्यवहार भी उसी के अनुकूल होता है। और उसका कार्य- व्यवहार स्वयं उसके लक्ष्य का प्रमाण और साक्षी होता है। अल्लाह ने जितने रसूल, नबी और सन्देशवाहक भेजे सबका परम लक्ष्य एक ही था और वह मनुष्य को यह बताना, सिखाना और समझाना कि ईश्वर से उसका वास्तविक सम्बन्ध किस प्रकार का है ईश्वर ही सृष्टि का सृष्टा है और मनुष्य का जन्मदाता है वही सबका स्वामी और पालनहार है उसके गुण कर्म और अधिकार में कोई उसके समान नहीं। एक वही इस योग्य है कि मनुष्य उसकी आज्ञा माने उसी की पूजा उपासना करे तथा अपने सम्पूर्ण जीवन से उसका भक्त बनकर रहे।

ईशदूतों ने अपने-अपने समय के मनुष्यों को इसी की शिक्षा दी और स्वयं अपने आचरण से ईश्वर भक्ति का आदर्श उपस्थिति किया वह चाहते तो स्वयं अपनी पूजा उपासना करा सकते थे परन्तु यह उनके पद के विरुद्ध था। उनका कर्तव्य तो मनुष्य को यह समझाना था कि मनुष्य की वास्तविक प्रतिष्ठा ईश्वर बनने में नहीं उनका भक्त बनने में है। यही सत्यधर्म और सत्यपथ है। अल्लाह के अंतिम रसूल और महा-ईशदूत ने अपने सम्पूर्ण जीवन से यही तथ्य समझाया और अपने समस्त आचार व्यवहार से यही आदर्श उपस्थित किया और यह आपके महा ईशदूत होने का अकाट्य प्रमाण है।

महाईशदूत की विशेषता-

आप एक ही समय में धर्म गुरु और धर्म नेता भी थे, सुधारक भी थे, सेनापति भी थे, नियत निर्माता भी थे, शासक भी थे, न्यायधीश भी थे गृहस्थ भी

थे और सब कुछ होते हुए और सभी अवस्था में परम ईश्वर भक्त भी थे संसार से अलग जंगल, खोह, गुफ़ा, मठ आदि में बैठकर ईश्वर भक्ति सरल है। परन्तु महाईशदूत की विशेषता यह है कि हर प्रकार के सांसारिक साधारण तथा असाधारण कार्यो का सम्पादन करते हुए भी आपका जीवन ईश्वर भक्ति से ओत-प्रोत था।

नमाज़ में ईश उपासना-

इस्लाम में ईश उपासना की सर्वांग विधि नमाज़ है। इसी से उपासना में उसका विशेष महत्व है। हर मुसलमान के लिए दिन रात में पाँच बार नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ अर्थात अनिवार्य कर्तव्य हैं। नमाज़ की विशेषता इसलिए है कि उसमें उपासना के सब प्रकार आ जाते हैं। ईश्वर के सम्मुख खड़ा होना घुटनों पर हाथ रखकर झुकना भूमि पर माथा टेकना बैठना और प्रत्येक अवस्था में ईश्वर का स्मरण तथा उसकी सत्ता महत्ता और पवित्रता का वर्णन और उससे लौकिक पारलौकिक कल्याण की याचना करना। महा ईशदूत को नमाज़ इतनी प्रिय थी कि आपने उसको अपनी आँखों की ठंडक कहा है। अर्थात आपकी ईश्वर भक्ति केवल नियम की पूर्ति न थी ईश्वर प्रेम की भक्ति थी, हार्दिक सुख मिलता था, हार्दिक शांति अनुभव होती थी और अनिवार्य नमाज़ तो दिन रात में पाँच ही समय की थीं परन्तु महाईशदूत आठ समय नमाज़ पढ़ा करते थे।

सूर्योदय से पहले, सूर्योदय के बाद, फिर और दिन चढ़े, फिर सूर्य ढले दोपहर बाद, फिर सूर्य अस्त के पश्चात्, लगभग एक तिहाई रात गये, फिर सोने के बाद कभी आधी रात को कभी कुछ पहले और कभी कुछ बाद उठ कर नमाज़ पढ़ते, यह नमाज़ बड़ी लम्बी- लम्बी होती नमाज़ में खड़े होकर कुर्आन का पाठ आरम्भ कर देते तो इतनी देर खड़े रहते मानो खड़े ही रहेंगे घुटनों पर झुकते तो इतनी देर झुके रहते और ईश्वर की पवित्रता एवं महानता का पाठ करते रहते मानो झुके ही रहेंगे।

माथा भूमि पर रखकर ईश्वर की पवित्रता एवं महिमा का पाठ करते तो जान पड़ता अब सर उठायेंगे ही नहीं यह वर्णन कोई और नहीं महाईशदूत की धर्मपत्नी माता आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने किया है।

"संयोगवश कोई दूसरे महाईशदूत के साथ नमाज़ में खड़ा हो जाता तो खड़े

खड़े थक जाता और चाहता कि नमाज़ तोड़कर अलग हो जाए। नमाज़ में खड़े खड़े आपके पाँव सूज जाते और जब आपसे कहा जाता कि ईश्वर ने तो आपको सब प्रकार से क्षमा कर दिया है। फिर आप इतना कष्ट क्यों उठाते हैं? तो कहते क्या मैं कृतज्ञ भक्त न बनूँ अर्थात् जैसे-जैसे ईश्वर की कृपा में वृद्धि होती जाती आपकी भक्ति बढ़ती चली जाती"।

महाईशदूत शान्ति और सुविधा ही की अवस्था में केवल नमाज़ न पढ़ते थे। बल्कि ईश-दूतत्व के आरम्भिक वर्षो में जब मक्के के विरोधियों के सम्मुख नमाज़ पढ़ना सम्भव न था आप मक्के के बाहर जाकर नमाज़ पढ़ा करते थे, आगे चलकर आप कअ़बे में नमाज़ पढ़ने लगे, आप पर घातक आक्रमण भी हुए। मदीना प्रस्थान के बाद जब मक्के निवासियों ने युद्ध आरंभ किया तो एक ओर युद्ध होता रहता था और दूसरी ओर आप नमाज़ पढ़ते होते थे। यात्रा में सवारी पर बैठे-बैठे नमाज़ पढ़ते रहते अर्थात् आप घर में हों मस्जिद में हों यात्रा में हों युद्ध स्थल में हों हर अवस्था में आप ईश भक्त थे।

एक सच्चे परमेश्वर प्रेमी और भक्त की विशेषता यह है कि वह सब कुछ कुछ करता हुआ भी परमेश्वर को याद करता रहे और प्रत्येक कार्य और प्रत्येक स्थिति में अपने को ईश्वर के अधीन समझे।

परमेश्वर विश्वास का अर्थ-

परमेश्वर पर विश्वास का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि ऊपर वाला है, बल्कि इस बात का ठीक-ठीक समझना भी आवश्यक है कि हम उसको किस प्रकार मानें और उसके प्रति हमारा व्यवहार कैसा हो? यदि इसमें तनिक भी भूल हो जाए और कोई त्रुटि और दोष रह जाये उसके प्रति उसका प्रभाव पूरे धर्म पर पड़ेगा और दूषित हो जाएगा। केवल कहने की बात नहीं है ऐसा होता चला आया है और वर्तमान समय में भी ऐसा हो रहा है।

विचारकों और दार्शनिकों ने परमेश्वर को अपनी-अपनी रुचि और विचार के सांचे में ढालकर उपस्थित कर दिया और लोगों ने उसी को ईश्वर का स्वरूप मान लिया, ज़ाहिर है कि वह ईश्वर का सम्य स्वरूप न था, वह स्वरूप था विचारकों और दार्शनिकों के विचार और दर्शन का।

ईश विश्वास सम्बन्धी उन्हीं दोषों और त्रुटियों को दूर करने और परमेश्वर की सत्ता के अनुकूल विश्वास की शिक्षा देने के लिए समय-समय पर परमेश्वर की ओर से दूत नियुक्त होते रहे। महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के समय में परमेश्वर के प्रति सर्वथा दूषित और उसकी महानता तथा पवित्रता के विरुद्ध विश्वास का प्रचार था।

परमेश्वर के प्रति हमारा व्यवहार-

परमेश्वर के विषय में सबसे मुख्य बात यह है कि उससे हमारा सम्बन्ध किस प्रकार का है, और उसके प्रति हमारा विश्वास, और व्यवहार कैसा होना चाहिए? परमेश्वर कितना महान है, हम कितने तुच्छ हैं, परमेश्वर कितना बलशाली है, हम कितने निर्बल हैं। परमेश्वर कितना अधिकार सम्पन्न है हम कितने विवश हैं, परमेश्वर कितना साधन सम्पन्न है हम कितने साधनहीन है; हम सर्वथा परमेश्वर के अधीन हैं।

हमको वह न देना चाहे तो कुछ नहीं मिल सकता। हमारे पास जो कुछ है उसी का प्रदान किया हुआ है, हमें जो कुछ मिल सकता है उसी की दया से मिल सकता है। महा ईश-दूत ने अपनी प्रार्थनाओं द्वारा उन्हीं तथ्यों को प्रकाशित किया है और समझाया है।

भाग-2

मस्जिद, वुज़ू और नमाज़ का तरीक़ा

अज़ान में नमाज़ का ज़िक्र

"ह्य्या अ़लस्सलाह" **आओ नमाज़ की ओर**

अज़ान में मुअ़ज़्ज़िन लोगों को नमाज़ की ओर बुलाता है, ताकि लोग अपने पैदा करने वाले मालिक के आदेश का पालन करके कामियाब हो सकें। इसलिए मुसलमान मस्जिद में आते हैं, अतः मस्जिद का महत्व और नमाज़ का उल्लेख विस्तारपूर्वक नीचे इस प्रकार दिया जाता है।

मस्जिद का महत्व

अल्लाह की नज़र में पूरी ज़मीन का सबसे ज़्यादा बेहतर भाग वह है जिस पर मस्जिद बनाई जाये अल्लाह से मुह़ब्बत रखने वाले की पहचान यह है कि वह मस्जिद से भी मुह़ब्बत रखते हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:-

इन्नमा यअ़मुरु मसाजिदल्लाहि ..... वलयौमिल आख़िर

अनुवाद- अल्लाह की मस्जिदों को वही लोग आ़बाद करते हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं।

ऊपर की आयतों और ह़दीसों से यह निम्न बातें मालूम हुईं।

(1) हर बड़ी छोटी बस्ती में वहाँ की ज़रुरत के अनुसार मस्जिद बनानी चाहिए।

(2) मगर वह ह़लाल माल से और ह़लाल ज़मीन में हो।

(3) मस्जिद का अ़दब करें यानी उस को पाक साफ़ रखें, उस में झाड़ू दिया करें उस की ज़रूरी ख़िद्मत का ख़याल रखें बद्बूदार चीज़ जैसे तम्बाकू वग़ैरह खाकर या लेकर या पीकर उस में न जाएँ वहाँ दुनिया का कोई काम या बात न करें।

(4) मर्दों को नमाज़ मस्जिद में पढ़नी चाहिये और बिना उ़ज़्र के जमाअ़त न छोड़नी चाहिये मस्जिद में जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने में यह भी फ़ायदा है कि आपस में सम्बन्ध बढ़ें। एक को दूसरे का ह़ाल मालूम रहे। मालिक की ह़दीस से भी इस का सुबूत मिलता है।

प्रश्न- अज़ान के बाद नमाज़ पढ़ने से पहले क्या किया जाता है?

उत्तर- नमाज़ से पहले हाथ, पैर, मुँह धोने को वुज़ू कहते हैं। जो निम्न प्रकार से किया ज़ाता है।

प्रश्न- वुज़ू कैसे किया जाता है?

उत्तर- वुज़ू इस तरह से किया जाता है।

1- सब से पहले दोनों हाथ धोएँ।
2- मुँह साफ़ करने के लिए तीन मर्तबा कुल्ली करें।
3- नाक में पानी डाल कर उसे साफ़ करें।
4- चेहरे को एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक धोएँ।
5- दोनों हाथ कोहनियों तक धाये जाते हैं।
6- फिर सर का मसह़ करें।
7- सब से आख़िर में दोनों पांव टख़नों तक धोएँ।

प्रश्न- वुज़ू कर लेने के बाद हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर- वुज़ू करने के बाद हमें पाक साफ़ कपड़े पहन कर क़िब्ला रुख़ खड़े होकर तकबीर कहना चाहिये।

प्रश्न- तकबीरे तह़रीमा के बाद हमें क्या पढ़ना चाहिये?

उत्तर- तकबीरे तह़रीमा के बाद हमें हाथ बाँध कर यह दुआ़ पढ़नी चाहिये-

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ۞

तर्जुमः- "ऐ मेरे अल्लाह! तू पाक है और तेरे लिए है हर तअ़रीफ़ और बरकत

वाला है तेरा नाम और ऊँची है तेरी शान और तेरे सिवा और कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं।

प्रश्न- इस दुआ़ के बाद क्या पढ़ना चाहिए?

उत्तर- इस के बाद اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ और بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ने के बाद कुर्आन मजीद की पहली सूरत यानी सूरः फ़ातिह़ा पढ़नी चाहिये और उस के साथ कुर्आन मजीद की कोई दूसरी छोटी सी सूरत या किसी बड़ी सूरत की तीन चार आयातें मिलाकर पढ़नी चाहिये। जैसे-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۞ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۞
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۞ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۞
صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۞

तर्जुमः- सब तअ़रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है। वह बड़ी रह़मत वाला और निहायत ही मेहरबान है। जज़ा के दिन यानी क़ियामत के दिन का मालिक है। हम तेरी ही इ़बादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं। ऐ अल्लाह! हमें सीधे रास्ते पर चला, उन अच्छे बंदों के रास्ते पर जिन पर तूने अपनी नेअ़मतें नाज़िल कीं, उन लोगों का रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब और ग़ुस्सा हुआ और वह गुमराह हुये। (ऐ अल्लाह! मेरी यह दुआ़ क़ुबूल फ़रमा)।

प्रश्न- इस के बाद क्या करना चाहिए?

उत्तर- तकबीर यानी अल्लाहु अकबर कहकर रुकूअ़ में चला जाना चाहिए।

प्रश्न- रुकूअ़ में क्या पढ़ना चाहिए?

उत्तर- रुकूअ़ में तीन मर्तबः سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ पढ़ा जाता है जिस के माने हैं "पाक है मेरा परवरदिगार जो बड़ी शान वाला है"। इसे तस्बीह़ कहते हैं।

प्रश्न- रुकूअ़ से उठते वक़्त क्या पढ़ना चाहिए?

उत्तर- रुकूअ़ से उठते वक़्त سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ पढ़ा जाता है जिस के माने हैं 'अल्लाह तआ़ला ने उस बन्दे की सुन ली जिस ने उस की तारीफ़ की'। और जब नमाज़ी सीधा खड़ा हो जाए तो उसे رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ पढ़ना चाहिये

जिस के माने हैं "ऐ हमारे परवरदिगार! सब तअ़रीफ़ें तेरे ही लिये हैं। और उस के फ़ौरन बाद सज्दे में चला जाना चाहिये।

प्रश्न- सज्दः में क्या पढ़ना चाहिये?

उत्तर- सज्दे में तीन मर्तबः سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَىٰ (पाक है मेरा परवरदिगार जो ऊँची शान वाला है) पढ़ा जाता है।

दो सज्दे पूरे किये जाते हैं और उन के दर्मियान थोड़ा सा बैठा जाता है।

प्रश्न- नमाज़ की एक रकअ़त कब पूरी होती है?

उत्तर- दूसरा सज्दः पूरा करने के बाद नमाज़ की एक रकअ़त मुकम्मल हो जाती है और इसी तरह़ बक़िया रकअ़त पूरी की जाती है, लेकिन दूसरी और आख़िरी रकअ़तों के बाद अत्तह़िय्यात के लिये बैठना पड़ता है।

प्रश्न- अत्तह़िय्यात में क्या पढ़ा जाता है?

उत्तर- अत्तह़िय्यात में यह दुआ़ पढ़ी जाती है।

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبٰتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ
اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ۔ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ
اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ۔

तर्जुमः- "अदब व तअ़ज़ीम के सब कलिमात अल्लाह तआ़ला ही के लिये हैं, और तमाम अ़िबादतें और पाकीज़ा चीज़ें अल्लाह तआ़ला ही के वास्ते हैं। ऐ नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! तुम पर अल्लाह की सलामती उस की रह़मत और बरकत हो और तुम पर भी अल्लाह तआ़ला की जानिब से सलामती हो और अल्लाह के नेक बन्दों पर भी"।

प्रश्न- क्या इस के बाद नमाज़ मुकम्मल हो जाती है?

उत्तर- अगर नमाज़ की दो रकअ़तें हों तो फिर तशह्हुद के बाद दुरूद और दुआ़ भी पढ़नी चाहिए।

प्रश्न- दुरूद और दुआ़ किस तरह पढ़ी जाती है?

उत्तर- पहले दुरूद पढ़ना चाहिये जिस के अल्फ़ाज़ यूँ हैं:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى

اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۔

तर्जुमः- ऐ अल्लाह! ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर और उन की आल पर ख़ास रह़मत फ़रमाइये जैसे तूने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) पर उन की आल पर रह़मत फ़रमाई। तू बड़ी तअ़रीफ़ों वाला है और बुर्जुगी वाला है।

दूसरे दुरुद की इबारत यह है:-

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰى
اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۔

तर्जुमः- ऐ अल्लाह! ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर और आप (सल्ल०) की आल पर बरकतें नाज़िल फ़रमा जैसे तूने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) पर और उन की आल पर बरकतें नाज़िल फ़रमाईं। तू बड़ी तअ़रीफ़ों वाला है और बुर्जुगी वाला है।

प्रश्न- दुरूद के बाद दुआ़ कौन सी पढ़नी चाहिये?

उत्तर- दोनों दुरूदों के बाद यह दुआ़ पढ़नी चाहिये।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ
فَاغْفِرْلِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ۔

तर्जुमः- "ऐ अल्लाह! बेशक मैंने ज़ुल्म किया अपने ऊपर और बहुत ज़्यादा और नहीं बख़्शता गुनाहों को मगर तू ही बस माफ़ कर दे मुझे तू ख़ुद और रह़म कर मेरे ऊपर। बेशक तू ही माफ़ करने वाला मेहरबान है।

प्रश्न- नमाज़ कैसे मुकम्मल की जाती है?

उत्तर- दुआ़ पढ़ लेने के बाद पहले दायें तरफ़ और फिर बायें तरफ़ मुँह फेर कर यह अल्फ़ाज़ कहे जाते हैं।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ ۔

तर्जुमः- आप पर अल्लाह की सलामती और रह़मत हो।

प्रश्न- क्या नमाज़ में सिर्फ़ दो रकअ़तें होती हैं या कम ज़्यादा?

उत्तर- बाज़ नमाज़ों की दो रकअ़तें, शाम की फ़र्ज़ नमाज़ की और इशा की वित्र की नमाज़ की, तीन तीन रकअ़तें और बाज़ नमाज़ों की चार-चार रकअ़तें होती हैं।

प्रश्न- तीन और चार रकअ़त वाली नमाज़ की सूरत में क्या करना चाहिए?

उत्तर- इस सूरत में दो रकअ़तों के बाद तशह्हुद पढ़कर उठ खड़ा होना चाहिए अब अगर नमाज़ तीन रकअ़तों पर मुश्तमिल है तो तशह्हुद, दुरूद और वह दुआ़ जो दो रकअ़तों वाली नमाज़ की मुकम्मल करने के लिए बनाई गई है उसे दोबारा तीसरी रकअ़त में पढ़ना चाहिए। इसी तरह अगर नमाज़ चार रकअ़तों वाली है तो फिर भी यह सब कुछ चौथी रकअ़त में दोहराना चाहिये।

प्रश्न- मुसलमानों पर एक दिन रात में कितनी नमाज़ें फ़र्ज़ हैं?

उत्तर- मुसलमानों पर दिन रात में पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं।

प्रश्न- यह नमाज़ें किस-किस वक़्त पढ़ी जाती हैं?

उत्तर- यह नमाज़ें इन वक़्तों में पढ़ी जाती हैं।

1- सुबह़ की नमाज़-

यह नमाज़ें फ़ज्र के नाम से मशहूर है। सुबह़ तुलूअ़ होने से सूरज निकलने तक पढ़ी जाती हैं।

2- ज़ुह्र की नमाज़-

यह नमाज़ सूरज ढ़लने से लेकर उस वक़्त तक पढ़ी जाती हैं जब तक कि हर चीज़ का साया उस के बराबर हो जाये।

3- अ़स्र की नमाज़-

इस का वक़्त सूरज गुरूब होने से दो घंटे पहले शुरु होता है और सूरज गुरुब होने तक रहता है।

4- मग़्रिब की नमाज़-

यह नमाज़ सूरज गुरूब होने के फ़ौरन बाद अदा की जाती है।

5- इ़शा की नमाज़-

जब रात का मुकम्मल अंधेरा छा जाता है तो उस वक़्त से लेकर सोने तक, आ़मतौर पर नमाज़े मग़्रिब के दो घंटे बाद इस नमाज़ का वक़्त शुरु होता है।

प्रश्न- मुख़्तलिफ़ नमाज़ों में नमाज़ की तफ़्सील क्या है?

उत्तर- तफ़्सील इस तरह है:

नमाज़	फ़र्ज़ रकअ़तें	सुन्नत रकअ़तें	नफ़्ल रकअ़ते
1- नमाज़े फ़ज्र	2	2- फ़र्ज़ों से पहले	X
2- नमाज़े ज़ुह्र	4	4- फ़र्ज़ों से पहले 2- फ़र्ज़ों के बाद	2 सुन्नत के बाद

नमाज़	फ़र्ज़ रकअ़तें	सुन्नत रकअ़तें	नफ़्ल रकअ़त
3- नमाज़े अ़स्र	4	4- फ़र्ज़ों से पहले	X
4- नमाज़े मग़्रिब	3	2- फ़र्ज़ों के बाद	2 सुन्नत के बाद
5- नमाज़े इ़शा	4	4- फ़र्ज़ों से पहले 2- फ़र्ज़ों के बाद	2 वित्र से पहले 2 वित्र के बाद
		और 3- रकअ़त वित्र	

प्रश्न- जुमअ़ के दिन ज़ुह्र की नमाज़ कैसे पढ़ी जाती है?

उत्तर- जुमअ़ के दिन ज़ुह्र की 4 फ़र्ज़ रकअ़तों के बजाय सिर्फ़ 2 रकअ़तें अदा की जाती हैं।

प्रश्न- क्या इन के अ़लावा कोई और नमाज़ें भी हैं?

उत्तर- जी हाँ। इन के अ़लावा और भी बहुत सी नमाज़ें हैं जो ख़ास मौक़े पर पढ़ी जाती हैं। जैसे ईदुल् फ़ित्र और ईदुल अज़हा की नमाज़ें जो इन ख़ुशी के त्योहारों पर अदा की जाती हैं और नमाज़े जनाज़ा जो किसी मुसलमान के इन्तिक़ाल के बाद पढ़ी जाती है।

प्रश्न- सफ़र की ह़ालत में नमाज़ों में क्या रिआ़यत होती है?

उत्तर- सफ़र की ह़ालत में सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ अदा करनी चाहिये और वह भी

सिर्फ़ दो रकअ़त। जैसे- ज़ुह्र, अ़स्र और इ़शा की नमाज़ के 4 फ़र्ज़ रकअ़तें हैं लेकिन मुसाफ़िर को सिर्फ़ 2 रकअ़तें पढ़नी चाहिए। अलबत्ता शाम की नमाज़ की वह 3 रकअ़तें अदा करेगा। फ़ज्र की वैसे ही दो रकअ़ते हैं जो पूरी पढ़ी जाती हैं।

प्रश्न- शरीअ़ते इस्लामी में मुसाफ़िर किसे कहते हैं?

उत्तर- जो शख़्स 48 मील के सफ़र में हो, उसे मुसाफ़िर समझा जाता है।

प्रश्न- क्या रेल के सफ़र के दौरान भी इस शरई इजाज़त से फ़ायदा उठाया जा सकता है?

उत्तर- जी हाँ। रेल के सफ़र के दौरान भी इस इजाज़त से फ़ायदा उठाया जा सकता है क्योंकि वह भी सफ़र है।

प्रश्न- अगर जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ें तो सना के बाद क्या पढ़ना चाहिए?

उत्तर- अगर नमाज़ रात के वक़्त हो और इमाम ऊँची आवाज़ से क़िरात करे तो ख़ुद ख़ामोश रहकर इमाम की क़िरात को सुनना चाहिए।

प्रश्न- जुमअ़ की नमाज़ किस तरह अदा की जाये?

उत्तर- ग़ुस्ल करके पाक साफ़ कपड़े पहने हैं। नमाज़ से पहले ख़ुशबू लगाएँ। मस्जिद में इमाम का ख़ुत्बा ख़ामोशी से सुने और फिर उस के पीछे दो रकअ़त नमाज़ पढ़े।

प्रश्न- क्या इन के अ़लावा भी कोई नमाज़ें हैं?

उत्तर- अगर मोमिन इन नमाज़ों की पाबन्दी से अदा कर सकें तो यह उन के लिये काफ़ी हैं। लेकिन नेक लोग इन के अ़लावा कुछ नफ़्ल नमाज़ें भी पढ़ते हैं। जैसे- सुबह़ की नमाज़ से पहले तहज्जुद की नमाज़--सुबह़ की नमाज़ से एक दो घंटे बाद चाश्त की नमाज़, और सूरज निकलने से दस पन्द्रह मिनट बाद इशराक़ की नमाज़। यह सब नफ़्ल नमाज़ें हैं और इन्हें नफ़्ल नमाज़ों की तरह पढ़ा जाता है।

प्रश्न- नमाज़े जनाज़ा किस तरह अदा की जाती है?

उत्तर- नमाज़े जनाज़ा में खड़े खड़े चार तकबीरें कहीं जाती हैं। इस नमाज़ में रुकूअ़ या सज्दा नहीं किया जाता।

प्रश्न- यह तकबीरें किस तरह कहीं जाती हैं?

उत्तर- इमाम मय्यित के सीने के मुक़ाबिल खड़ा होकर नमाज़ की नियत करके एक तकबीर पढ़ता है।

प्रश्न- क्या इमाम के पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों को भी यह तकबीर कहनी चाहिये?

उत्तर- जी हाँ। उन्हें भी आहिस्ता से यह तकबीर कहनी चाहिए। फिर इस के बाद यह सना पढ़नी चाहिये।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ
وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

तर्जुमः- ऐ अल्लाह! तू अपनी तअ़रीफ़ों के साथ बुलन्द व पाक है तेरा नाम बरकत वाला है और बुलन्द है तेरी शान। तेरी तअ़रीफ़ बहुत बड़ी है और तेरे सिवा अ़िबादत के लायक़ कोई नहीं।" इस सना के ख़ात्मे के साथ ही दूसरी तकबीर कही जाती है।

प्रश्न- दूसरी तकबीर के बाद क्या पढ़ा जाता है?

उत्तर- दूसरी तकबीर के बाद वही दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाता है जो आ़म नमाज़ों की आख़िरी रकअ़त में पढ़ा जाता है।

प्रश्न- क्या इन के अ़लावा भी कोई नमाज़ है?

उत्तर- इन के अ़लावा भी कुछ नफ़्ल नमाज़ें हैं। जैसे-

नमाज़ें इस्तिस्क़ाः- बारिश के लिये दुआ़। **नमाज़े कुसुफ़ः-** सूरज ग्रहण और चाँद ग्रहण के वक़्त की नमाज़ें और नमाज़ें ह़ाजत वग़ैरह।

लेकिन इन की ज़रूरत कभी-कभी महसूस होती है और वह भी चन्द लोगों के अदा करने से यह अदा हो जाती हैं।

भाग-3

इस्लाम और मुसलमान का अर्थ और उसकी मूल आस्थाएँ

प्रश्न- इस्लाम का क्या अर्थ होता है और इस के संस्थापक कौन हैं?

उत्तर- इस्लाम का शब्दिक अर्थ होता है, 'सुपुर्दगी' (Surrender) या अपने आप को बिना किसी शर्त के परमेश्वर (अल्लाह) के हवाले कर देना, अर्थात अल्लाह (परमेश्वर) की इच्छा के अनुसार पूर्ण रूप से नत्मस्तक हो जाना।

इस्लाम का पारिभाषिक अर्थ होता है, "अल्लाह तथा ईश्वरीय शिक्षा को स्वीकार कर लेना तथा उसके प्रति नत्मस्तक हो जाना, अपने और अपने सर्वस्व को अल्लाह के अधीन कर देना तथा सम्पूर्ण जीवन में अल्लाह का आज्ञाकारी और भक्त बन जाना" अर्थात उसी को उपास्य और पूज्य मानना, उसी से प्रार्थना करना, अपना पूर्ण जीवन उसी के नियम व आदेशानुसार व्यतीत करना।

इस्लाम धर्म के संस्थापक (Founder of Islam)

इस्लाम धर्म की स्थापना के विषय में हमारे कुछ इतिहासकारों ने लिखा है, कि इस्लाम धर्म के संस्थापक-ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) हैं, जबकि ऐसा नहीं है, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने किसी नये धर्म की स्थापना नहीं की बल्कि पिछले ईशदूतों और उन पर अवतरित ग्रन्थों की पुष्टि करते हुए पवित्र कुर्आन के रूप में मानव जीवन को पूर्ण विधान दिया।

वास्तव में ***इस्लाम धर्म के संस्थापक ह़ज़रत आदम(अ़लै०) हैं,*** जिन को अल्लाह ने बिना माता-पिता के पैदा किया था उनके बाद उनकी पत्नी हव्वा को

उन्हीं से पैदा किया, इन्हीं दोनों पति-पत्नी से मनुष्यों की उत्पत्ति का आरम्भ हुआ। जिनका विस्तार पूर्वक उल्लेख पवित्र कुर्आन के 'सूर-ए-बकरः' और विभिन्न सूरतों में, तथा भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व प्रथम खण्ड के चतुर्थ अध्याय और बाइबिल व दूसरे अनेक ग्रन्थों में किया गया है कि इस धरती के पहले व्यक्ति ह़ज़रत आ़दम (अ़लै०) थे, जिनका धर्म, इस्लाम था।

इस्लाम विभिन्न भाषाओं में

ह़ज़रत आ़दम (अ़लै०) से लेकर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तक जो ईशदूत जिस स्थान पर आते थे, वहीं की भाषा के अनुसार इस्लाम का नाम या उस का भाव बताते थे, जैसे-वैदिक काल में ***"सर्व समर्पण धर्म"*** था जिसका अर्थ होता है 'इस्लाम', परन्तु अन्त में जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) मक्का में पैदा हुए तो चूंकि वहाँ की भाषा अ़रबी थी; इसलिए उन्होंने अ़रबी भाषा में इस्लाम कहा जिसकी स्थापना ह़ज़रत आ़दम (अ़लै०) ने की थी उसी को और ***पूर्ण रूप देने वाले ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) हैं।***

ह़ज़रत आ़दम (अ़लै०) से लेकर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तक बहुत से सन्देष्टा आते रहे, जो मनुष्य की आवश्यकता के अनुसार ईश्वरीय शिक्षा व आदेश देते रहे, परन्तु जब यह मनुष्य रूपी समाज बाल्यावस्था से आगे बढ़ा तो इस की आवश्यकता हुई कि पूरे विश्व में एक ऐसा स्थान हो, जहाँ से पूरे विश्व को ईशज्ञान प्रदान हो सके। उसके लिए परमेश्वर ने महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को नियुक्ति किया और उन्हें अ़रब देश के मक्का शहर में पैदा करके उन पर ईश्वरीय संविधान के रूप में कुर्आन का अवतरण किया, ताकि मानव जाति अपने पैदा करने वाले मालिक के आदेशानुसार अपना जीवन व्यतीत कर सके।

अतः जिस इस्लाम धर्म की स्थापना ह़ज़रत आ़दम (अ़लै०) ने की थी, उसी को पूरा करने के लिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को पिछले तमाम रसूलों (ईशदूतों) और उनकी शिक्षाओं की पुष्टि करते हुए, क़ियामत (महाप्रलय) तक के तमाम इन्सानों के लिए परमेश्वर (अल्लाह) ने एकमात्र अन्तिम रसूल (महाईशदूत) बना कर भेजा जिन्होंने पवित्र कुर्आन और अपने उपदेशों के ज़रिये जीवन के हर क्षेत्र

जैसे- वैचारिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक में रहनुमाई की जिन का अनुसरण करके मानव जाति अपनी तमाम समस्याओं का समाधान कर सकती है।

प्रश्न- मुसलमान या मुस्लिम किसे कहते हैं?

उत्तर- मुसलमान या मुस्लिम वह व्यक्ति है जो अपने आप को अल्लाह के समक्ष बिना किसी शर्त के हवाले कर दे। अर्थात अल्लाह (परमेश्वर) की इच्छा के अनुसार पूर्ण रूप से नतमस्तक हो जाए, तथा सम्पूर्ण जीवन में अल्लाह का आज्ञाकारी और भक्त बन कर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अन्तिम महाईशदूत मानते हुए अपना पूर्ण जीवन उन्हीं के आदेशानुसार व्यतीत करे चाहे वह नस्ली मुसलमान हो या कोई भी व्यक्ति।

प्रश्न- काफ़िर किसे कहते हैं?

उत्तर- काफ़िर शब्द व्याकरण की दृष्टि से गुणवाचक संज्ञा है, अपमानबोधक नहीं। पवित्र कुर्आन में कुफ़्र का अर्थ अवसर के अनुरूप विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है, जैसे- इन्कार, अवज्ञा, कृतघ्नता, निरादर, नाक़द्री, निष्ठावान, किसान, नाशुक्री, अधर्म और सच्चाई को छुपाने वाला आदि। इस प्रकार कुफ़्र करने वाले को अ़रबी भाषा में काफ़िर कहते हैं। कुफ़्र का शब्द उन लोगों के लिए भी प्रयुक्त है जो अपने को इस्लाम का अनुयायी और मुसलमान कहते थे, परन्तु इस्लाम के प्रति निष्ठावान न थे। अतः जो व्यक्ति अल्लाह का इन्कार करे और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अन्तिम सन्देष्टा न माने और अन्तिम ईशग्रन्थ का इन्कार करे, वह चाहे मुसलमान हो या कोई भी व्यक्ति काफ़िर ही कहलाएगा।

कुर्आन में जिन काफ़िरों से युद्ध की बात कही गई है उस का कारण उनका मात्र काफ़िर होना काफ़ी नहीं बल्कि वह बात उन के घोर अपराध और उन ह़ालात के कारण कही गई है जो उस समय उन्होंने पैदा किये थे। ***अगर कोई मुसलमान*** भी ऐसा अपराध करेगा और जुल्म की परिस्थितियाँ पैदा करेगा जिनमें युद्ध आवश्यक हो जाता है तो उसके ख़िलाफ़ भी वही मामला किया जाएगा जो किसी काफ़िर के साथ किया जाता है।

प्रश्न- क्या कुर्आन या इस्लाम में ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने की आज्ञा दी गई है?

उत्तर- आज्ञा तो बड़ी बात, अनुमति तक नहीं है। कुर्आन के सूरः बक़रः आयत नं० 256 में कहा गया है कि ***"दीन (धर्म) के विषय में ज़बरदस्ती नहीं हिदायत तो गुमराही से साफ़-साफ़ खुल चुकी है।"***

इस से मालूम हुआ कि ज़बरदस्ती किसी को मुसलमान बनाना कुर्आन के विरुद्ध है और इस ईश्वरीय आज्ञा का उल्लंघन करना महापाप है। जब तक कोई व्यक्ति अपनी इच्छा और दिल से स्वतन्त्रतापूर्वक अल्लाह के आदेशों को स्वीकार नहीं करेगा वह हरगिज़ मुसलमान नहीं हो सकता।

कुर्आन की इस पंक्ति के उतरने की घटना इस प्रकार है, एक मुसलमान के दो बेटे ईसाई थे, उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से कहा, "मेरे बेटे ईसाई मत को छोड़ने पर राज़ी नहीं होते, तो क्या मैं उन को बाध्य कर सकता हूँ?" उस पर यह आयत उतरी और कहा गया, हरगिज़ नहीं कर सकते।

इस आयत की व्याख्या में 'इब्ने कसीर' (रह़०) जो कुर्आन के महान प्रमाणित आचार्य हैं, उन्होंने लिखा है कि ***"किसी व्यक्ति को इस्लाम में दाख़िल होने पर विवश नहीं किया जा सकता।"***

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी (रह़०) लिखते हैं कि ***"ख़ुदा ने दीन के कार्य को ज़बरदस्ती पर निर्भर नहीं किया बल्कि अधिकार और अख़्तियारात दे रखा है।"*** इस प्रकार कुर्आन की और भी बहुत सी आयतों में ज़बरदस्ती किसी को इस्लाम स्वीकार करवाने से मना किया गया हैं जैसे- सूरः यूनुस आयत नं० 108, सूरः कहफ़ आयत नं० 29 व 31, सूरः काफ़िरून आयत नं० 6, सूरः यूनुस आयत नं० 99, 41, 100, 108 सूरः बनी इस्राईल आयत नं० 7, सूरः जासिया आयत नं० 14, सूरः माइदा-92, सूरः शूरा 48, सूरः ग़ाशिया 22

अतः यदि कोई व्यक्ति कुर्आन के ख़िलाफ़ कार्य करता है तो वह अपने स्वार्थ के लिए करेगा उस का इस्लाम या मुसलमान से कोई सम्बन्ध नहीं।

इस्लाम ने प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतन्त्रता दी है, चाहे स्वीकार करे या इन्कार, किसी को बाध्य नहीं किया गया, लेकिन किसी को इस बात का हक़ नहीं कि वह किसी के इस अधिकार को छीने। जिस प्रकार किसी व्यक्ति को कोई बात ***मानने या न मानने का मौलिक अधिकार*** (Fundamental Right) है, ठीक इसी प्रकार से यदि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से कोई बात माने तो किसी को इस बात का भी हक़ नहीं है कि वह उसके इस मानने को रोके, अर्थात इस्लाम में किसी के मौलिक अधिकार के हनन की इजाज़त नहीं (Islam protects fundamental Rights of every person) इसलिए कि आस्था के विषय में अल्लाह ने हर एक को आज़ाद कर रखा है, परन्तु हर व्यक्ति की यह ज़िम्मेदारी है कि जिस चीज़ को वह सही समझता हो दूसरों तक पहुँचाए ***लेकिन पहुँचाने में केवल समझाने की ज़िम्मेदारी है, ज़बरदस्ती नहीं*** ! इसलिए कि ऊपर वाला पूछेगा कि तुमने सही बात पहुँचाई थी या नहीं, 'वह' यह नहीं पूछेगा कि सामने वाले ने माना था या नहीं।

प्रश्न- मुसलमान बनने के लिए किन-किन बातों का करना अनिवार्य है?

उत्तर- मुसलमान बनने के लिए, कोई भी व्यक्ति किसी भी धर्म, जाति या नाम का हो मुसलमान बन सकता है। जैसा मशहूर है कि ख़त्ना कराने वाला, गोश्त खाने वाला या मुसलमान घर में पैदा होने वाला ही मुसलमान होता है। ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि नीचे दिये गये शब्दों को चाहे स्वयं पढ़ कर मान ले या किसी से पढ़वा ले, मुसलमान हो जाता है। उस के लिए मोलवी साहब या किसी मुसलमान के पास जाने की भी ज़रूरत नहीं होती, कि फ़लाँ से कलिमा पढ़ेंगे तभी मुसलमान होंगे ऐसा नहीं है बल्कि बेहतर है कि वह सबसे पहले ग़ुस्ल (स्नान) करे, जिसमें इन तीन बातों का ध्यान रखें-

(1) मुँह में पानी भर कर ग़रारे के साथ कुल्ली करें।

(2) नर्म हड्डी तक नाक में पानी डाल कर साफ़ करें।

(3) पूरे शरीर पर पानी इस प्रकार बहायें कि बाल के बराबर भी सूखा न रहें।

अब यह कलिमा पढ़ेः-

"लाइलाह- इल्लल्लाहु- मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि"

या

"अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु,
व अशहदु अन्न- मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि"

अनुवाद- "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल (अन्तिम महाईशदूत) हैं"।

ऊपर दिये गये अक्षरों को कलिमा कहते हैं। इसे पढ़ने के बाद आगे दी गई मूल आस्थाओं पर विश्वास करना अनिवार्य हो जाता है, चाहे नस्ली मुसलमान ही क्यों न हो, इस लिए कि इस्लाम में कोई भी व्यक्ति नाम की बुनियाद पर मुसलमान नहीं होता ***बल्कि कर्म की बुनियाद पर मुसलमान होता है।*** यदि कोई अपना नाम भगत सिंह रखते हुए नीचे दी गई तमाम मूल आस्थाओं पर विश्वास रखे तो वह मुसलमान कहलाएगा। यह लोगों में एक बहुत बड़ा भ्रम है कि मुसलमान केवल वह है जो मुसलमान घराने में पैदा हुआ हो, बाक़ी तमाम लोग काफ़िर हैं। ऐसा नहीं,बल्कि नीचे दी गई इस्लाम धर्म की मूल आस्थाओं पर जो भी यक़ीन रखेगा, केवल वही वास्तव में मुसलमान होगा।

प्रश्न- कलिमा पढ़ने के बाद किन-किन बातों पर आस्था रखना अनिवार्य है?

उत्तर- कलिमा पढ़ने के बाद नीचे दी गई बातों पर आस्था रखना अनिवार्य हैः

इस्लाम धर्म की मूल आस्थाएँ

1. तौहीद (अद्वैतवाद) का सिद्धान्त-

इस्लाम में सबसे पहला विश्वास यह है कि अल्लाह पर ऐसी आस्था रखना कि वह अल्लाह अकेला है, उस का कोई साझीदार नहीं, वह अद्वितीय है, उसकी सत्ता, उसके गुण तथा कर्म में कोई उसके समान नहीं। वह स्वतः है, अनादि है, अनन्त और अविनाशी है, उसी ने इस पूरी सृष्टि की रचना की, वह ज़िन्दा, सुनने वाला, देखने वाला है, न कोई उसकी तरह है न कोई उसके बराबर है,

वह सर्वशक्तिमान और सर्वगुण सम्पन्न है, वह किसी काम के लिए किसी का मुहताज नहीं प्रकृति और जीव भी अपने आप नहीं हैं। उनको भी अल्लाह ही ने उत्पन्न किया है, उसी ने ज़मीन, आसमान, चांद, सूरज, सितारे, जिन्न, इंसान और तमाम जीव जन्तुओं को पैदा किया। वही रोज़ी देने वाला तमाम दुनिया का मालिक है, वही मारता और जिलाता है, अर्थात उसी की आज्ञानुसार सब कुछ होता है। वह न खाता है, न पीता है, और न सोता है, वही रोगी को अच्छा करता है, वही तकलीफ़ों को दूर करता है। वही स्वयं हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

इसी प्रकार वह हाथ, पैर, नाक, कान और हर प्रकार की मूर्ति से पाक है, उसकी कोई प्रतिमा या मूर्ति नहीं, सभी उसके मुहताज हैं, वह किसी का मुहताज नहीं और न उसे किसी चीज़ की ज़रूरत। वही अकेला पूजा, उपासना, अ़िबादत और प्रार्थना का अधिकारी है, बाक़ी सब उसके पुजारी और उपासक हैं, चाहे वह कैसा ही गुणवान और कीर्तिमान हो।

वह अल्लाह पिता, पुत्र, पति,पत्नी जैसे संबंधों से मुक्त है, ऐसा बन्धन अल्लाह की महानता और पवित्रता के विरुद्ध है, इसी प्रकार वह किसी भी प्रयोजन से, किसी भी प्राणी का रूप धारण नहीं करता, न वह किसी कार्य के लिए शरीर धारण करने पर बाध्य है। उसने जब केवल अपनी इच्छा शक्ति से इतने बड़े सृष्टि की रचना कर दी तो किसी कार्य के लिए उसको शरीर धारण करने की क्या आवश्यकता, यह उसकी पवित्रता के विरुद्ध है।

वही निगेहबानी(रक्षा) करने वाला तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला अद्वितीय है।

2. रिसालत (ईशदूतत्व विश्वास)-

सर्वप्रथम अपने और सारे ब्राह्मण्ड के पैदा करने वाले मालिक (अल्लाह) पर आस्था रखने के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अन्तिम सन्देष्टा मानते हुये अपने आप को अल्लाह का बन्दा (भक्त) मानना और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व सभी ईशदूतों(रसूलों) पर आस्था रखते हुए आप (सल्ल०) को अन्तिम महाईशदूत (आख़िरी रसूल) और आप (सल्ल०) पर अवतरित पवित्र क़ुर्आन को अन्तिम विधान मानना।

3. अल्लाह की ओर से अवतरित ईशवाणी या ईशग्रन्थों पर विश्वास-

अल्लाह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व बहुत से सन्देशवाहकों को भेजता रहा, जिन पर ईशवाणी भी अवतरित करता रहा, परन्तु अन्तिम महाईशदूत पर अवतरित ग्रन्थ पवित्र क़ुर्आन जो संशोधन से पाक है और अब क़ियामत तक यही पूर्ण विधान रहेगा। जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने अल्लाह की ओर से जिस प्रकार दिया था उसी प्रकार आप (सल्ल०) ने पूर्ण रूप से तमाम इन्सानों तक पहुँचा दिया।

4. अल्लाह के फ़रिश्तों (देव दूतों) पर आस्था-

इस बात पर आस्था रखना कि जिस प्रकार अल्लाह ने इन्सानों और जिन्नों को पैदा किया, उसी प्रकार फ़रिश्तों (देवदूतों) को भी उसी ने अपनी शक्ति से पैदा किया और फ़रिश्तों को जिस काम में लगा दिया वह उसका विरोध करने में असर्मथ हैं। अतः ईशवरीय वाणी पवित्र क़ुर्आन को भी अल्लाह ने अपने एक सर्वश्रेष्ठ फ़रिश्ते ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) के माध्यम से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अवतरित किया।

5. तक़्दीर पर आस्था-

अच्छी बुरी तक़्दीर अल्लाह की ओर से होती है, वह आइन्दा (भविष्य) में होने वाली सभी घटनाओं को जानता है, वही जिसे चाहता है इ़ज़्ज़त देता है, और जिसे चाहता है ज़लील करता है।

6. क़ियामत और मरने के बाद दोबारह उठाये जाने पर आस्था-

इस बात पर आस्था रखना कि यह सृष्टि अनादि और अनन्त नहीं है। इसे एक दिन नष्ट भ्रष्ट कर दिया जाएगा। फिर जिस प्रकार अल्लाह ने इस सृष्टि की रचना की थी उसी प्रकार वह अपनी इच्छा शक्ति से एक नए सृष्टि की रचना कर देगा और जब से सृष्टि की रचना हुई है तब से अन्त तक के सारे मनुष्यों को जीवित करके उनके कर्मो का ह़िसाब लेगा और उनके कर्मो के अनुसार जन्नत (स्वर्ग) देगा या जहन्नम (नर्क) में डालेगा।

प्रश्न- इस्लाम के प्रमुख आधार कौन-कौन से हैं?

उत्तर- इस्लाम के बुनियाद पाँच आधार है, जिन पर विश्वास रखते हुए उस पर अ़मल करना फ़र्ज़ अत्यन्त (अनिवार्य) है। जिस के प्रमुख आधार इस प्रकार हैं।

1. कलिमा

"लाइलाह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि"

अनुवाद- *'अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना (इ़बादत) के योग्य नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) अल्लाह के रसूल(संदेष्टा) हैं।*

2. नमाज़

नमाज़ अर्थात दिन रात में पांच बार नियमित समय पर अल्लाह की इ़बादत (उपासना) करना, जिस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने की।

3. ज़कात

अर्थात धर्मदान, हर उस व्यक्ति पर प्रतिवर्ष जिसके पास साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े सात तोला सोना हो, उस पर पूरी मालियत का ढ़ाई प्रतिशत कुर्आन में दिये गये नियमानुसार दान करना।

4. रोज़ः (व्रत)

रोज़ः अर्थात प्रतिवर्ष रमज़ान के महीने में पूरे महीने के रोज़े हर बालिग़ मर्द,औ़रत पर फ़र्ज़ (अति अनिवार्य) हैं।

5. ह़ज

जो अ़रब में स्थित मक्का नगर में अल्लाह के बने हुए घर 'क़अ़बः' तक की जो यात्रा करने का सार्मथ्य रखता हो, उस पर ह़ज करना अनिवार्य (फ़र्ज़) है।

अन्तिम शब्द

हमें पूर्ण विश्वास है कि पाठकगड़ निष्पक्ष होकर अपनी भ्रांतियों को दूर कर के सह़ी निर्णय लेंगे।

(मुफ़स्सिरे कुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तकें

1. कुर्आन का पैग़ाम (कुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
2. कुर्आन का पैग़ाम (कुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
3. कुर्आन का पैग़ाम (कुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
4. कुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-1)
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-2)
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-3)
8. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-4)
9. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-5)
10. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-6)
11. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-7)
12. इस्लाम धर्म क्या है? (कुबूले ह़क़ के बाद इस्लामी कोर्स)
13. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम
14. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन
15. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Hard bound)
16. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Paper back)
17. जन्नत के ह़ालात और जन्नती
18. कुफ़्र और शिर्क की ह़क़ीक़त
19. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का ह़ुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
20. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी
21. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार
22. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अ़मालें ह़स्ना की रौशनी में)
23. सह़ाबा का इस्लाम और उसके बाद
24. इस्लामी राज्य की शासन व्यवस्था
25. अज़ान क्या है?
26. आओ नमाज़ की ओर
27. रोज़ः का ह़ुक्म और उसके मसायल
28. ह़ज और उ़मरा का आसान तरीक़ा
29. ज़कात का ह़ुक्म और उसके मसायल
30. उ़मरह का आसान तरीक़ा
31. आपके सवालों का आसान ह़ल (भाग एक)
32. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे
33. इस्लाम की बुनियादी मालूमात
34. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत
35. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पाकीज़ह ज़िन्दगी
36. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ *(शरीअ़त की रोशनी में)*
37. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन
38. सूर-ए-फ़ातिह़ा की तफ़्सीर
39. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)
40. पवित्र कुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम
41. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से
42. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिह़ासिक दृष्टि से)
43. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी
44. इस्लामी विरासत की तक़्सीम एक नज़र में
45. मीरास की तक़्सीम (कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
46. लाइलाह इल्लल्लाहु की गवाही
47. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)
48. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में
49. सृष्टि का सृष्टा कौन?
50. ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास
51. प्राकृतिक नियम और परमेश्वर से इस्लाम का सम्बन्ध
52. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त
53. इस्लाम?

उर्दू पुस्तकें

54. मआ़नी कुर्आनुल् करीम (लफ़्ज़ी तर्तीब के एतिबार से रवाँ उर्दू तर्जुमः)
55. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?
56. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी
57. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात
58. कुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा
59. कुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद
60. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत
61. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम
62. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल

63. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़
64. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)
65. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर
66. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के हुक़ूक़
67. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रुफ़
68. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में
69. बौद्ध धर्म और इस्लाम
70. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े
71. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में
72. अल्लाह तआ़ला का तआ़रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल
73. क़ियामत तक के फ़ित्नें (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पेशीनगोई की रोशनी में)
74. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
75. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत
76. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल
77. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात(क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
78. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत*(मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोश्नी में)*
79. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती
80. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
81. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र
82. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)
83. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सह़ाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा
84. क़ुर्आन के मुताबिक़ दअ़वत और इस्लामी जिहाद
85. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त
86. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)
87. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा
88. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल
89. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा
90. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल
91. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त
92. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)
93. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़
94. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़रुफ़
95. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा
96. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा
97. इस्लाम का ज़रई निज़ाम
98. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत
99. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद
100. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम
101. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)
102. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें
103. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात (अह़ादीस की रौशनी में)
104. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)
105. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ
106. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर
107. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा
108. आ़माल सालिह़ा (भाग-1)
109. आ़माल सालिह़ा (भाग-2)
110. अल्लाह तआ़ला का तआ़रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल
111. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की करीमाना अख़्लाक़ और आप (सल्ल०) की सीरत
112. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
113. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
114. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
115. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
116. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
117. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
118. नबियों की सीरत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
119. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
120 ज़ुल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
121. तह़ारत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
122. ह़िफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
123. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
124. ई़दैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
125. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल

126. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
127. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल
128. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
129. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
130. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल
131. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल
132. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल
133. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल
134. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल
135. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल
136. तर्बियत,रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल
137. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल
138. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
139. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल
140. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल
141. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल
142. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
143. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
144. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त और आ़शूरा के वाक़िआ़त
145. नबियों व सह़ाबा का ज़रिया-ए-मआ़श
146. रसूल करीम (सल्ल०) के बेटे और बेटियाँ
147. सह़ाबियात के अहम वाक़िआ़त
148. रसूल करीम (सल्ल०) की अज़वाज मुतह़हरात
149. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब

अ़रबी पुस्तकें

150. ग़ैर अ़रबी रस्मुलख़त में क़ुर्आन की इशाअ़त
151. मन्ज़तुल मराह फ़ी ज़ौइल इस्लाम वल्अद्यान वल्ह़ज़ारात अलमुख़्तलह
152. अलु इन्सान फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वस्सुन्नह
153. नुब्जतु अ़न सिफ़ाति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
154. ग़ज़्व-ए-ह़ुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन वल् सुन्नह
155. अस्बाब तह़बतुल् अअ़माल वल् हमियतुल् निया फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह
156. अल् फ़ितन अल् वाक़िअ़ः इला क़ियामः अल् साअ़ह फ़ी ज़ौइल अह़ादीस अल् शरीफ़
157. अल् नबी अल् ख़ातिम मन, मता, वआईन फ़ी ज़ौइल कुतुबुल् हिन्दूसीया वद्दिनातुल मुख़्तलिफ़ा
158. अल्हिन्दूसिया फिरकुह़ा, अक़ाइदोह़ा, मुनज़्ज़िमातुह़ा व अहदाफ़ुह़ा
159. अहमयतुल् दअ़वह वल् तब्लीग़ फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह
160. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद
161. अत्तअ़रीफ़ुलवजीज़ बिदियानी बूजा
162. तअ़द्दुदे अज़्ज़ौवजात वल् इस्लाम फ़ी जौए दियानात

अंग्रेज़ी पुस्तकें

163. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण
164. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप
165. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम
166. दी स्वॉड आफ़ इस्लाम
167. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी
168. इस्लाम?

अनुवाद की हुई पुस्तकें

169. मुन्तख़ब अह़ादीस (लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)
170. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ़ बग़ावत (लेखक-इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल रह़०)
171. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर (लेखक-ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह०)
172. मानवता आज भी उसी चौखट की मुह़ताज़ है (लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)
173. रमज़ान का तोह़फ़ा (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)
172. मानवता आज भी उसी चौखट की मुह़ताज़ है (लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)
173. रमज़ान का तोह़फ़
174. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)
175. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) (तस्ह़ीह़ व तर्तीब- मु० मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी)
176. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुह़म्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)
177. दो सौ मआ़शरती मसायल